बच्चों को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए

Jainism With Art

8

कला द्वारा संस्कार सिंचन

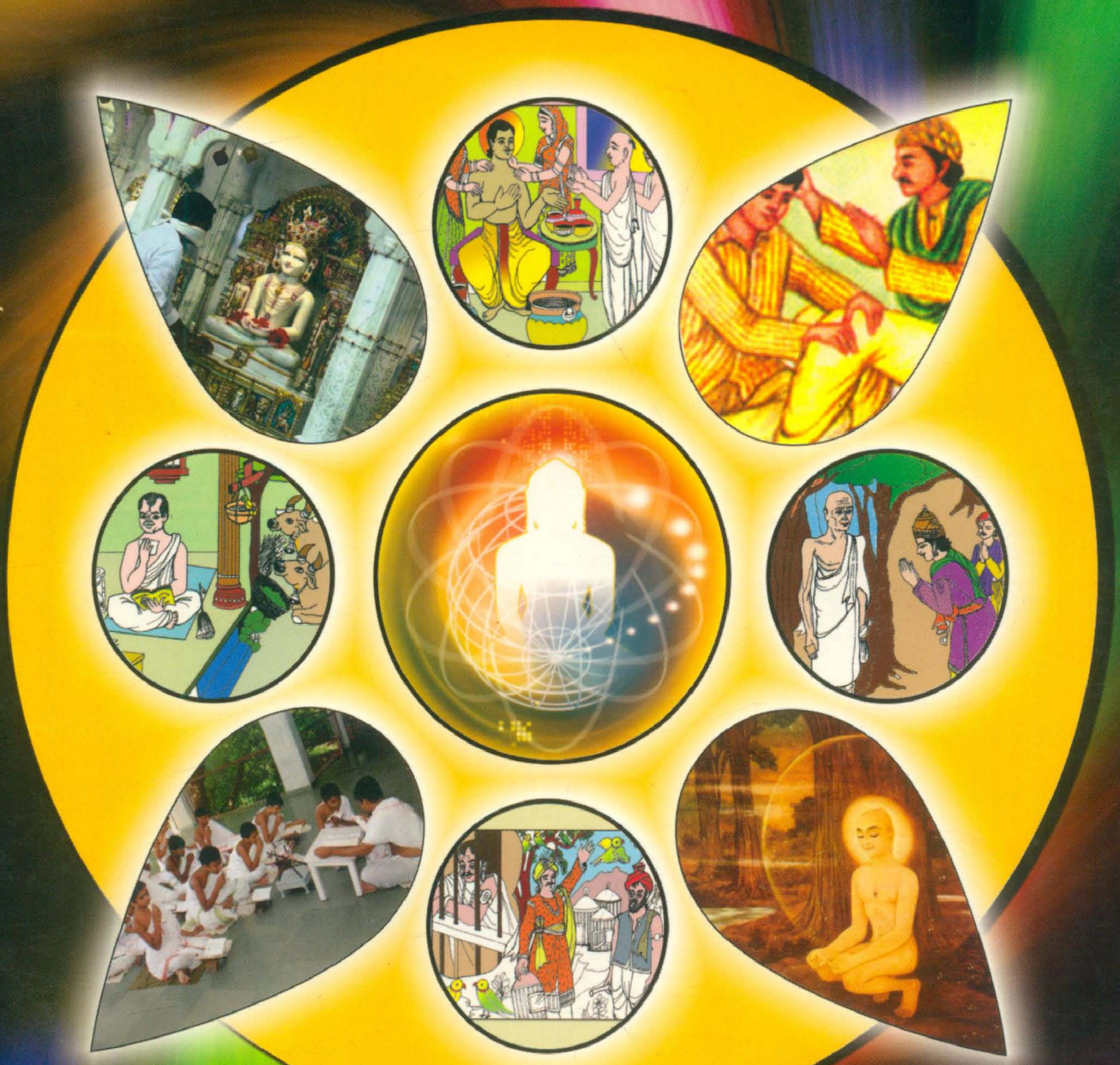

...प्रेरणा...

प.पू. आचार्य श्री नयचंद्रसागरसूरीश्वरजी म.सा.

Shravak's Life style

श्रावक की दिनचर्या

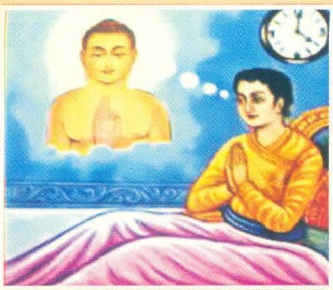

सुबह ५ बजे-निद्रात्याग, नवकारस्मरण
5-00 AM-Getting up, Navkar Smaran

सुबह ६ बजे तक-सामायिक, प्रतिक्रमण
Till 6-00 AM-Samayik, Pratikraman

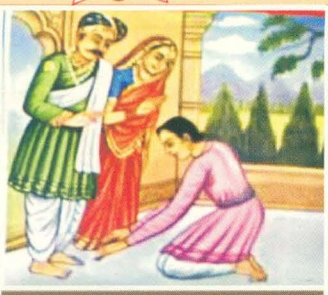

सुबह ६ से ६-३०-मा-बाप को वंदन
6 to 6-30 AM- Respect to mother-Father

सुबह ६-३० से ७-००-वासक्षेप पूजा
6-30 to 7-00 AM-Vaskshep Puja

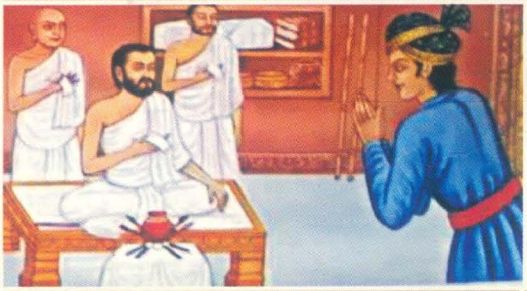

सुबह ७-०० से ७-३०-गुरुवंदन एवं पच्चक्खाण
7-00 to 7-30 AM-Guruvandan & Pachchkkhan

सुबह ८-०० बजे - नवकारशी
8-00 AM - Navkarshi

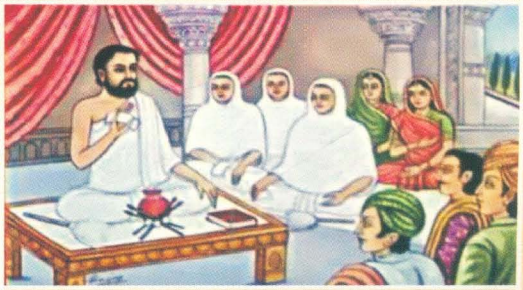

सुबह ९ से १०-३० बजे - प्रवचन
9-00 to 10-30 Am - Pravachan

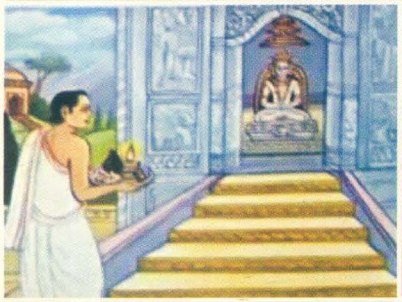

सुबह १०-३० से ११-१५ बजे -प्रभुपूजा
10-30 to 11-15 AM- Prabhu Puja

सुबह ११-१५ बजे - सुपात्रदान
11-15 AM - Supatradan

सुबह ११-३० बजे - दोपहर का भोजन, शालागमन / धंधा
11-30 Am - Lunch, Going to School / Business

सायं ६-०० बजे - चउविहार
6-00 PM- Chauvihar

सायं ६-३० बजे - संध्यादर्शन
6-00 PM - Darshan

सायं ७ से ८ बजे - प्रतिक्रमण
6 to 8-00 PM - Pratikraman

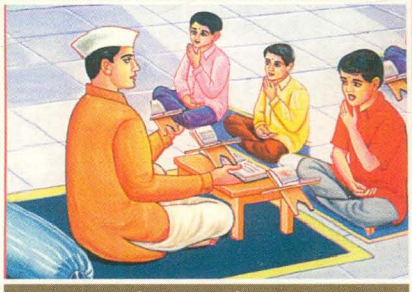

सायं ८ से ८-४५ बजे - पाठशाला
8 to 8-45 PM - Pathshala

सायं ८-४५ से ९-१५ बजे - वैयावच्च
8-45 to 9-15 PM - Vaiyavachch

सायं ९-१५ बजे - पारिवारिक चर्चा
9-15 PM - Family Discussion

रात १०-०० बजे - नवकारस्मरण, निद्रा
10 PM - Navkar smaran, sleep

बच्चो को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए

Jainism with Art-8

कला द्वारा संस्कार सिंचन

आजके रंगीन चित्रमय जमाने में बच्चों को धार्मिक-आध्यात्मिक संस्कार देनेके लिए रंगपूरणी चित्र पुस्तिका अनुमोदनीय माध्यम है।

"पढना-सुनना-चित्र बनाना-चित्रोंमें रंग भरना सबमें क्रमशः एकाग्रता बढती है" इसी सिद्धांतोको ध्यानमें रखकर कला-द्वारा संस्कार सिंचन नामक यह पुस्तिका प्रकाशित हो रही है। यह छोटीसी पुस्तिकामें जैन शासनके विविध क्षेत्रीय तत्त्वोंका ही ज्ञानदान हो रहा है।

महापुरुषोंकी कहानी और रंगपूरणी द्वारा सहजतासे दिमागमें संस्कार को स्थिर करके प्रत्येक बालक बालीका अपना जिवन धर्ममय-अध्यात्ममय बनाए ऐसी भावना - आशीर्वाद के साथ..

नयचंद्रसागर.

...प्रेरणा...
वर्धमान तपोनिधि
पू.आ.श्री नयचंद्रसागरसूरिजी म.सा.

...मार्गदर्शक...
मुनि श्री ऋषभचंद्रसागरजी म.सा.
मुनि श्री शीतलचंद्रसागरजी म.सा.

...संयोजक...
मुनि श्री सुमतिचंद्रसागरजी म.सा.

...प्रकाशन...
पूर्णानंद प्रकाशन

...संचालक...
गीरीशभाई दोशी / जीज्ञेशभाई शाह
Mo. 79779 44600 / 73833 90712

...अनुमोदना...
संस्कारवाटिका, चेन्नाई
गुडबोय-पं.श्री वेराग्यरत्नविजयजी म.सा.
लर्न एन्ड टर्न-पू.पं.श्री मनोभूषणविजयजी म.सा.
संस्कारधन-पू.भद्रगुप्तविजयजी म.सा.
अनुवाद सहायक-पू.सा.श्री अनंतनिधिश्रीजी म.सा.

कोबा (गांधीनगर) पि. ३८२००७

महाराष्ट्र

बोरिवली-कांदिवली-मीरारोड आदि	
भावनाबेन	98193 17766
मुलुंड-भांडुप-विक्रोली आदि	
अमितभाई गांधी	98672 12848
विवेकभाई	98199 71556
घाटकोपर - रुपेशभाई	93222 31001
वालकेश्वर-भाविकभाई	98211 66679
माटुंगा-तुषारभाई	98202 35992
गोरेगाम - पींकीबेन	99695 45565
चोपाटी - मुकेशभाई	93222 78552
मलाड-अनिलभाई	88501 21255
भायंदर-सचीनभाई	99875 41944
भायखला-रसीलाबेन	93211 04850
नवजीवन-नितिनभाई	98331 22175
कल्याण-मोहनभाई	98204 75515
भिवंडी-अतुलभाई	9890769493
डोम्बीवली-धनेशभाई	93225 66437
नासिक-राकेशभाई	97300 11110
नंदुरबार-आकाश जैन	87805 15309

गुजरात

अमदावाद-परेशभाई	93749 52660
आणंद-नीतीनभाई	98250 30825
बरोडा-कृतार्थभाई	93749 93060
बरोडा-आकाशभाई	94274 60140
बरोडा-सपनभाई	99243 65161
नवसारी-वलसाड-बारडोली आदि	
जनकभाई सर	95372 71201
हिंमतनगर-हार्दिकभाई	9898689591
महेसाणा-भाविनभाई	98792 18081
उंझा-हेमाबेन	98250 67204
जामनगर-निशीथभाई	94299 41554

सुरत

निकेशभाई	96629 84685
मार्गेशभाई	90999 25330
हिरलभाई	99794 22629
कतारगाम- पारस शाह	81281 45044
अडाजण-पाल	
भावेशभाई	96622 98800
डभोई-सौरीनभाई	97250 04267

पूना

श्रीपालभाई	96652 32226
दिनेशभाई	98226 27476
विकेशभाई	98234 45704
अशोकभाई	98900 49333
अमितभाई	98229 64843
मयुरभाई	94219 02989
महावीरभाई	72768 89363

मध्यप्रदेश रतलाम-इंदोर-उज्जैन आदि

श्री नवकार परिवार	
अमित मुणत	98272 75740
राजगढ शुभम्	97556 85883

प्रतापगढ (राज.)

नुपुलभाई जैन	94130 47032

बेंग्लोर-चेन्नाई एवं समग्र दक्षिण भारत

लवीशभाई	97234 00447

यदि आप भी बालसाहित्य भेजना चाहते हो तो पूर्णानंद प्रकाशन के पते पर भेजे। आप के नाम से मेगेझीन मे उचित जगह पर प्रकाशित किया जायेगा।

212272

काव्य–स्तुति

हे प्रभु आनंद दाता, ज्ञान हमको दीजिये,
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिये,
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें,
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें।
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम,
तस्मात् कारुण्य भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ...2
सवि जीव करुं शासन रसी, आ भावना हैये वहु,
झरणा करुणाना बनी हुं, जीवनभर वहेतो रहुं,
शणगार संयमना सजुं, झंखु सदा शिवसुंदरी,
प्रभु आट्लु जनमो–जनम, देजो मने करुणा करी...3

नाद–घोष

एक, दो, तीन, चार
जैन धर्म की जयजयकार
पांच, छः, सात, आठ
जैन धर्म का देखो ठाठ
नौ, दस, ग्यारा, बारा
जैन धर्म का बजे नगाड़ा
तेरा, चौदा, पंदरा, सोला
जैन धर्म का बच्चा बोला
सतरा, अठरा, उन्नीस, बीस
जैन धर्म के बीसो बीस
इक्कीस, बाइस, तेइस, चौबीस
जैन धर्म के तीर्थंकर चौबीस ।

KAVYA - STUTI

HAI PRABHU ANAND DATA, GYAN HAMKO DIJIYE,
SHIGHRA SARE DURGUNO KO, DUR HAMSE KIJIYE,
LIJIYE HAMKO SHARAN ME, HAM SADACHARI BANEIN,
BRAHMCHARI, DHARM RAKSHAK, VEER VRATDHARI BANEIN ...1
ANYATHA SHARANAM NASTI, TVAMEV SHARNAM MAM,
TASMAAT KARUNYA BHAVEN, RAKSH RAKSH JINESHWAR ...2
SAVI JIV KARUN SHASHAN RASI, AA BHAVNA HAIYYE VASI,
JHARNA KARUNANA BANI HUN, JIVAN BHAR VAHETO RAHUN,
SHANGAR SANYAMNA SAJUN, JHANKHU SADA SHIV SUNDARI,
PRABHU ATALU JANMO - JANAM, DEJO MANE KARUNA KARI ...3

NAAD - GHOSH

AK, DO, TIN, CHAR - JAIN DHARM KI JAY-JAYKAAR
PANCH, CHHAH, SAAT, AATH - JAIN DHARM KA DEKHO THATH
NAU, DAS, GYARA, BARA - JAIN DHARM KA BAJE NAGADA
TERA, CHOUDA, PANDRA, SOLA - JAIN DHARM KA BACHHA BOLA
SATRA, ATHARA, UNNEES, BIS - JAIN DHARM KE BISO BIS
EKKIS, BAEES, TEIS, CHOUBIS - JAIN DHARM KE TIRTHANKAR CHOUBIS.

ये नहीं खाना

Do not eat these

आलू नहीं खाना,

प्याज नहीं खाना,

अदरक नहीं खाना,

मूली नहीं खाना,

शकरकंद नहीं खाना,

रतालु नहीं खाना,

शहद नहीं खाना,

मक्खन नहीं खाना,

अण्डे तो हरगिज नहीं खाना ।

क्यों ? क्योंकि.....

ये सब खाने से मन बिगड़ता है,

पाप लगता है,

खराब विचार आते हैं,

खराब काम होते हैं,

दुर्गतियों में जाना पड़ता है ।

इसलिए, कुछ खाने को न मिले तो भूखे रहना या एक वस्तु (द्रव्य) कम खाना, पर ऊपर लिखी वस्तुएँ कभी नहीं खाना।

आलू नहीं खाना

प्याज नहीं खाना

मूली नहीं खाना

शकरकंद नहीं खाना

अण्डे तो हरगिज नहीं खाना

दुर्गतियों में जाना पड़ता है

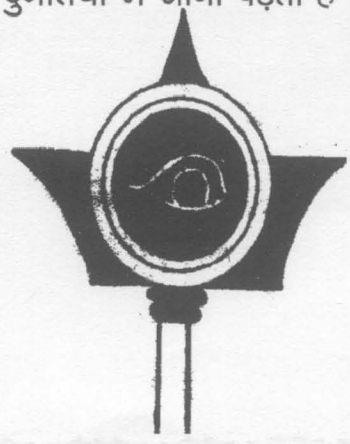

Do not eat **Potato**,

Do not eat **Onion**,

Do not eat **Ginger**,

Do not eat **Radishes**,

Do not eat **Sweet Potatoes**,

Do not eat **Beatroot**,

Do not eat **Honey**,

Do not eat **Butter**,

Do not eat **Eggs** at all.

Why ? Because .....

Eating above things spoils our soul,

Eating these leads to sin,

Eating these brings evil thoughts,

Eating these causes evil deeds,

Eating these leads to downfall & distress.

It is therefore advised to remain hungry but not to eat any of these things.

धन्ना काकंदी

काकंदी नगरी में भद्रा सेठानी का पुत्र धन्यकुमार (धन्नाजी) था। पूर्वभव में शुभ कार्य करने से पुण्य रूपी सूर्य चमक रहा था। उसके प्रभाव से 32 करोड़ सोना-मोहर के मालिक बने। अप्सरा जैसी 32 कन्याओं के साथ उनका विवाह हुआ। बहुत ही ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे।

एक बार धन्यकुमार महावीर प्रभु की देशना सुनने गए। भगवान को तीन प्रदक्षिणा देकर, दोनों हाथ जोड़कर भावपूर्वक सुनते हैं। **प्रभु की वाणी शक्कर से भी मीठी होती है। अंतर में शांति प्रदान करती है।**

"संसार के सभी सुखों में छ काय के जीवों की हिंसा होती है। हिंसा पाप बंधाकर दुर्गति का दान करती है। अतः संसार के विलास से दूर रहना चाहिए। **त्याग में सुख है। भोग में दुःख है।** परमात्मा की यह वाणी धन्नाजी के अंतर में उतर गई। उन्होंने वैराग्यपूर्वक दीक्षा ली और दीक्षा के दिन से ही नियम लिया कि बेले (2 उपवास) के पारणे बेले करना तथा पारणे में आयंबिल तप करना।

धन्नाजी का कैसा विशिष्ट पुण्य! बेशुमार संपत्ति को छोड़ते भी देर न लगी। धन, संपत्ति, वैभव, पत्नियाँ छोड़ी, शरीर की ममता भी छोड़ी।

बेले के पारणे आयंबिल में लूखा-नीरस आहार लेते हैं। जिस पर मक्खी भी बैठना पसन्द न करे, ऐसा क्षुद्र आहार घर-घर से लाते हैं। आठ महीने में धन्ना मुनि की काया सूख गई। मात्र हड्डी और चमड़ी रही। आँखें अंदर चली गई। साधुक्रिया के अलावा शेष समय जंगल में जाकर काउस्सग्ग करते।

एक दिन श्रेणिक महाराज ने भगवान से सवाल किया, प्रभु आपके 14 हजार साधु में श्रेष्ठतम आराधक कौन हैं ? जवाब मिला - श्रेणिक! चढ़ते भाव वाले श्रेष्ठ आराधक धन्नाजी हैं। प्रभु की बात सुनकर राजा श्रेणिक वन में मुनि के दर्शन करने गए। धन्नाजी का सूखा हुआ शरीर देखकर राजा भाव विभोर हो गए। अहोभावपूर्वक वंदन किए। **बेशक नरेन्द्र और देवेन्द्र भी जिसे वंदन करते हैं ऐसा त्याग-वैराग्य ही आत्मा का सच्चा धन है।**

अंत में धन्नाजी ने राजगृही नगरी के पास वैभारगिरि पर्वत पर एक महीने का अनशन किया एवं समाधिपूर्वक काल करके अनुत्तर विमान में गए। वहाँ से मनुष्य बनकर मोक्ष जायेंगे।

⇨ बोध : प्यारे बच्चों .....

- **अपार धन संपत्ति मोक्ष दिलवाने में समर्थ नहीं है, उसके त्याग से ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।**
- **दीक्षा के पूर्व रोज मेवा मिठाई खाने वाले धन्नाजी ने जिंदगीभर आयंबिल किए। हम भी महीने या वर्ष में कम से कम 2-4 आयंबिल अवश्य करें।**

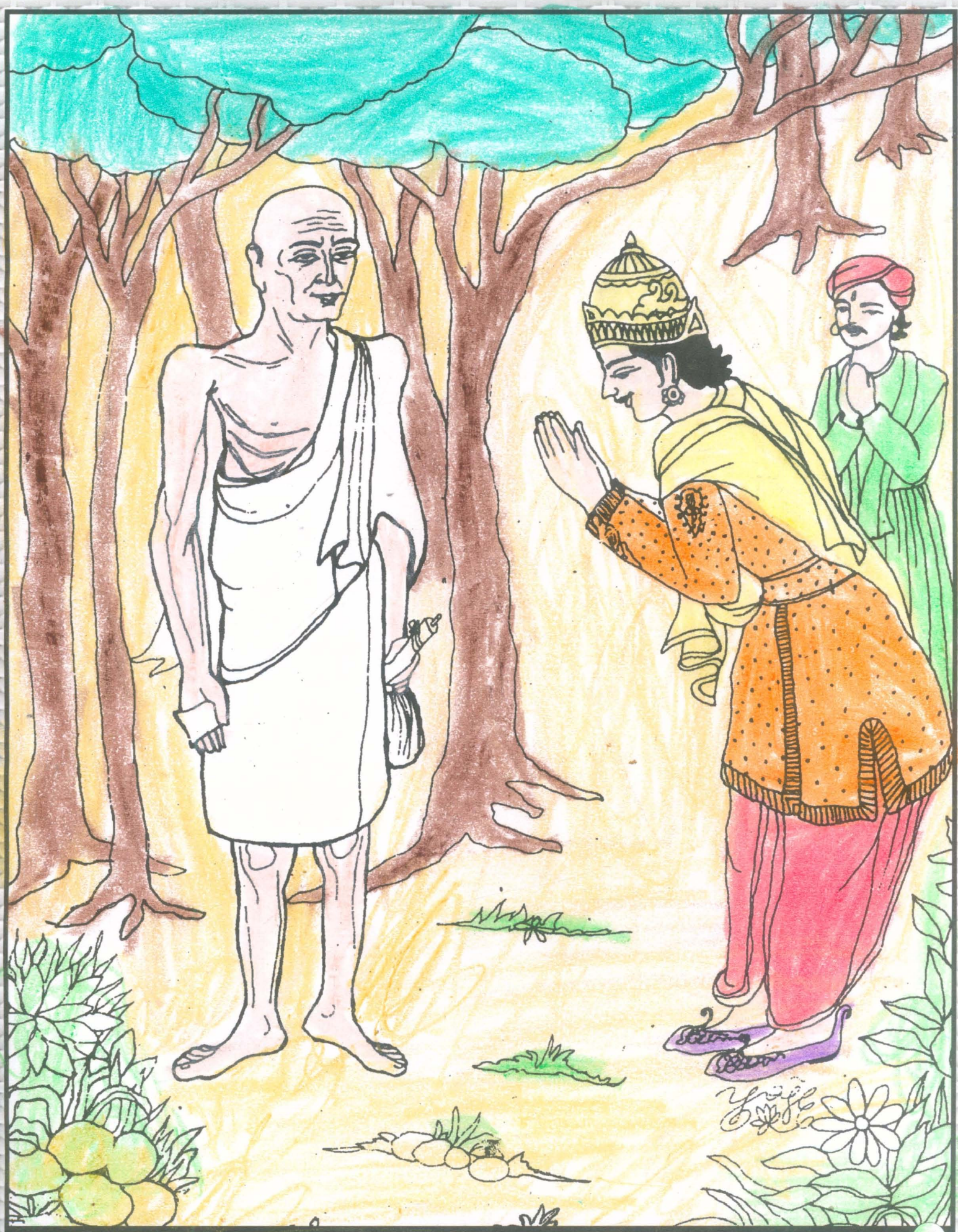

1. धन्ना काकंदी / Dhanna Kakandi

Dhanna Kakandi

In Kakandi city, there was a woman lived named Bhadra. She had a son named Dhanya Kumar (Dhannaji). Due to his holy deeds (karmas) in previous lives, Dhanya Kumar became the owner of a lot of wealth in this life. He got married to angel like 32 beautiful girls and was living a very luxurious and happy life.

Once Lord Mahavir came to Kakandi. Dhanya Kumar went to listen to his preachings (Deshna). He listened to him with great respect and full concentration. **The speech of Lord Mahavir was sweeter than sugar and was producing peace in** everyone's heart. He said, "In all deeds, all pleasures of this materialistic world, **"hinsa" is involved which ultimately results into sins (paap). Therefore, one should remain away from this 'sansar'. Bliss (sukh) is in sacrifice (tyag) and grief (Dukh) in the pleasures (bhog)".**

This preaching of Lord Mahavir touches the heart of Dhanya Kumar and he took Diksha (became a monk) after taking permission from his mother. From the very first day of Diksha he accepted a severe Vow that he will do fast for two days (Bela) and break the fast with Aayambil, and this he will continue till death!

What great was his Punya (virtue) . He left all his wealth.. all his wives.. and even the attachment to his own body in no time .

Dhannaji (Dhanya Kumar) continues with his severe vow. Due to this he became very lean in only eight months. Bones became visible in his body, his eyes went deep. For most of the time he used to be in 'Kaussagga' (meditation) in the forest.

One day king Shrenik questioned Lord Mahavir, "Out of 14000 disciples of yours, who is the best disciple? Who has done the toughest and most rigorous aaradhna ?" Lord Mahavir replied, "Dhanna".

Having heard this, Shrenik went to monk Dhanna and bowed to him with utmost respect, saying that, his **life is worth praising as the Lord Mahavir himself describes about him.**

At last Dhannaji fasted for one month until death on Vaibhargiri Hill near Rajgrahi and went peacefully in anuttar (heavenly house). From there he will take birth in Mahavideha Kshetra and from there will go to 'Moksha'.

Great Aangar... Great Tapasvi Dhannaji.

⇨ **Moral Dear Children.....**

- **Enormous wealth is not helpful to us in getting Moksha, only its sacrifice helps us in getting moksha.**
- **Dhannaji who used to have sweets, dry fruits every day in his meals before Diksha, did Aayambil throughout his life after the Diksha. Should we not do 2-4 Aayambils every month or atleast every year ?**

सनत् कुमार चक्रवर्ती

प्रथम देवलोक के मालिक सौधर्मेन्द्र अपनी सभा में बैठे हुए थे। इधर-उधर की बातें चल रही थी। इस दौरान रूप-सुंदरता की चर्चा चली। इन्द्र ने कहा, इस जगत में सनत् कुमार चक्रवर्ती का रूप और कांति अद्वितीय है।

देवों का वैक्रिय शरीर होता है। खूबसूरती अपार होती है। इन देवों के सामने मनुष्यों की क्या बिसात ? तो भी इंद्र मनुष्य की तारीफ कर रहे हैं ... देव सभा में बैठे हुए विजय-विजयंत नाम के दो देव इस प्रकार का विचार कर चक्रवर्ती के दर्शन और परीक्षा के लिए धरती पर आए। ब्राह्मण का रूप बनाकर दोनों ने राजमहल में प्रवेश किया। सनत् कुमार चक्रवर्ती उस समय स्नान की तैयारी कर रहे थे। उन्होंने प्रणाम कर पूछा, भूदेवजी! आपका कैसे आना हुआ ? दोनों ब्राह्मणों ने कहा कि, आपके रूप की प्रशंसा सुनकर बहुत दूर से आए हैं।

स्वप्रशंसा सुनकर अभिमान करना मनुष्य की प्रकृति है। सनत् कुमार ने भी गर्वित होकर कहा, "मेरा असली रूप तो राजसभा में दिखाई देगा। वस्त्रालंकृत से सजा हुआ तेजस्वी रूप देखने वहाँ आना । कुछ समय बाद वस्त्र - आभूषणों से सुसज्जित चक्रवर्ती राज सिंहासन पर बैठे तब दोनों ब्राह्मण वहां आए। राजा ने पूछा, क्यों भूदेवजी अब तो मेरा रूप कई गुना अधिक दिख रहा है ना ? ब्राह्मणों ने उदास होकर कहा - राजन् ! आपका रूप तो नष्ट हो चुका है। आप निस्तेज दिखाई दे रहे हैं। आपके शरीर में एक साथ 16 महारोग उत्पन्न हो चुके हैं। आपके थूक पर मक्खी बैठे तो वह भी मर जाएगी। सनतकुमार ने थूकदानी में थूका। मक्खी बैठते ही मर गई। राजा विचार करने लगा - "**मेरा अभिमान ही मेरे रूप का विनाशक है।** मैं मूर्ख हूँ जो अनित्य देह पर दीवाना हुआ। **कितनी भी देखभाल करेंगे, तो भी शरीर तो सड़ने ही वाला है।**" इस प्रकार के विचार से वैराग्य हुआ और विनयधर मुनि के पास उन्होंने दीक्षा ग्रहण कर ली ।

16 महारोगों का असर हुआ। शरीर बदसूरत हो गया। काया दुर्गन्धमय बनने के बाद भी चिकित्सा नहीं करवाई। समभाव से सब सहन करते हैं। बेले के पारणे बेले करते हैं। इसके प्रभाव से अनेक लब्धियां प्राप्त हो गई । वो दोनों देव वैद्य का रूप लेकर मुनि के पास आए एवं उपचार के लिए प्रार्थना करने लगे।

सनत् मुनि कहते हैं, मुझे तो भाव रोगों को खत्म करना है। शरीर के रोगों से मुझे कोई मतलब नहीं है। यह कहकर उन्होंने अपनी एक कोढ़ वाली उंगली मुंह में डालकर निकाली। और आश्चर्य ! उंगली एकदम निरोगी एवं सुंदर बन गई।

देवों को महसूस हुआ कि रोग नाश करने की शक्ति होने के बावजूद भी शरीर पर कैसी निर्मोह दशा है। अहोभावपूर्वक वंदन करके, अपना असली स्वरूप दिखाकर देव अपने स्थान पर चले गए।

सनत् मुनि 1 लाख वर्ष का संयम पालन कर तीसरे देवलोक में उत्पन्न हुए।

⇨ बोध : प्यारे बच्चों.....

- **अपने रूप, बुद्धि, शक्ति का गर्व न करें, एक दिन सब खत्म हो जाएंगे।**
- **तप व संयम पालन से अनेक लब्धियां उत्पन्न होती हैं।**

2. सनत् कुमार चक्रवर्ती / Sanat Kumar Chakravarti

Sanat Kumar Chakravarti

The owner of first heaven, Saudharmendra was sitting in his assembly. Usual talks were going on. Meanwhile the topic of beauty came up. Indra said, the look and beauty of Sanat Kumar Chakravarti is unmatched in this world .

Devatas have a great build, enormous beauty. Human do not stand anywhere in front of the them but still Indra is praising the beauty of a human being ! Surprised by this, two Devatas named Vijay and Vijayant, came down to earth to see and examine the Chakravarti. They entered the palace in the disguise of Brahmin.

Sanat Kumar was preparing for his bath at that time. He greeted them and asked," Bhudevji, what brings you here?" " We have come from far land to visit you. We have heard a lot about your beauty that brought us here.

Its a human tendency to feel proud on hearing self-praise. So Sanat Chakravarti in pride said, " You will see my real beauty in the assembly. Do visit there to see my stunning beauty. The Devatas left saying OK.

Wearing fabulous clothes and ornaments, Chakravarti seats on the throne. Both Brahmins came there. King said, "I hope you are finding my beauty more now, Bhudevji". Brahmins sadly told, "O King, you have lost your majestic look. The dashing look is gone. Your body has got 16 diseases simultaneously. If a bee would sit on your spit , it may die. Sanatkumar spitted. A bee sat on it and died !

King started thinking, **"My pride is the destroyer of my beautiful look.** I am a fool to have gone made in the beauty of the body. **To whatever extent you pamper it or care for it, the body will be destroyed one day."** Realizing all this, he took deeksha from Muni Vinaydhar.

The 16 diseases showed their effects. The body became ugly. However, he didn't get it treated even when his body started stinking. He bears everything with great patience and starts fasting. As an effect of this he acquires many Labdhis (Majestic powers). Now both the Devata took the form of Vaidya (Doctor) and came to Muni and insisted him for the treatment of the diseases.

Sanat Muni replied that, I have to get my inner diseases treated. I do not care about the body diseases. After saying this, he took one of his infected fingers in mouth and took it out. The finger became disinfected, pretty and attractive.

Both the Devata realized that though he has got the power to cure the diseases, still he doesn't have any attachment with his body. Both of them saught blessings of Muni with great respect, took their real appearance and went back to their place.

Sanat Muni lived for 1 lakh years as monk and then reincarnated in the third heaven.

⇨ **Moral Dear Children.....**

- **Don't be proud of your appearance, intelligence, power etc. All these will end one day.**
- **The Taap and Diksha bring us many majestic powers (Labdhis).**

तत्त्व जानकर जैन बनो

1. **सत्तरभेदी पूजा के रचयिता कौन हैं ?**
   अ. उपाध्याय सकलचंद्रजी ब. उपाध्याय यशोविजयजी
   क. उपाध्याय उदयरत्नजी ड. उपाध्याय सत्यविजयजी
2. **वाचक–पाठक का पर्यायवाची नाम क्या है ?**
   अ. अरिहंत ब. सिद्ध क. आचार्य ड. उपाध्याय
3. **भगवान महावीर ने कितने वर्ष की उम्र में दीक्षा ली ?**
   अ. 28 ब. 30 क. 27 ड. 12
4. **सनत् मुनि ने शरीर में हुए रोग को कितने साल तक सहन किया ?**
   अ. 500 ब. 600 क. 700 ड. 800
5. **सीमंधर स्वामी भगवान का लांछन क्या है ?**
   अ. वृषभ ब. हाथी क. घोड़ा ड. बंदर
6. **भगवान का मेरूपर्वत पर अभिषेक करते समय इन्द्र महाराजा कितने रुप धारण करते हैं ?**
   अ. 3 ब. 5 क. 108 ड. असंख्य
7. **स्नातस्या थोय की रचना किसने की थी ?**
   अ. पू.बप्पभट्टसूरिजी ब. पू.हेमचंद्राचार्यजी क. पू. बालचंद्र सूरिजी ड. पू.हीरसूरिजी
8. **अरिहंत भगवान को केवलज्ञान होता है तब कितने कर्म क्षय होते हैं ?**
   अ. 2 ब. 4 क. 8 ड. 6
9. **भक्तामर स्त्रोत के रचयिता कौन हैं ?**
   अ. पू. मूनिचंद्रसूरिजी म. ब. पू. हीरसूरिजी म.
   क. पू. रत्नाकरसूरिजी म. ड. पू. मानतुंगसूरिजी म
10. **गौतमस्वामीजी किस श्रावक को "मिच्छामी दुक्कडं" कहने गये थे ?**
    अ. आनंद श्रावक ब. अंबड़ श्रावक क. कामदेव श्रावक ड. सोम श्रावक
11. **मंदिर जाने की इच्छा करने मात्र से कितने उपवास का फल मिलता है ?**
    अ. एक उपवास ब. दो उपवास क. तीन उपवास ड. चार उपवास
12. **तलाजा तीर्थ में मूलनायक भगवान कौनसे हैं ?**
    अ. वासुपूज्यस्वामीजी ब. सुमतिनाथजी क. चंद्रप्रभस्वामीजी ड. सुविधिनाथजी

तत्व जानकर जैन बनो के उत्तर
1) अ 2) ड 3) ब 4) क 5) अ 6) ब
7) क 8) ब 9) ड 10) अ 11) अ 12) ब

Learn Elements to become Jain

1. **Who is the creator of the Sattarbhedi Puja ?**
   a. Upadhyay Sakal chandraji
   b. Upadhyay Yashovijayji
   c. Upadhyay Uday ratnaji
   d. Upadhyay Satyavijayji
2. **What is synonym for 'Vachak-Pathak' ?**
   a. Arihant b. Siddha c. Aacharya d. Upadhyay
3. **At what age did lord Mahavir Swami take Diksha ?**
   a. 28 b. 30 c. 27 d. 12
4. **For how many years did Sanat Muni bear the diseases ?**
   a. 500 b. 600 c. 700 d. 800
5. **What is the symbol (Lanchhan) of God Simandhar Swami ?**
   a. Vrashabh (Ox)
   b. Hathi (Elephant)
   c. Ghoda (Horse)
   d. Bandar (Monkey)
6. **With how many different forms does Indra appear with, while doing God's 'abhishek' at Meru Parvat ?**
   a. 3 b. 5 c. 108 d. Infinite
7. **Who is the author of Snatasya thoya ?**
   a. P.P. Bappabhattasuri ji
   b. P.P. Hemchandracharya ji
   c. P.P. Balchandramuni ji
   d. P.P. Hirsuri ji
8. **How many karma diminish when God Arihant achieves Keval Gyan?**
   a. 2 b. 4 c. 8 d. 6
9. **Who is the author of Bhaktamar stotra ?**
   a. P.P. Munichandrasuri ji Maharaja
   b. P.P. Hirsuri ji Mahar aja
   c. P.P. Ratnakarsuri ji Maharaja
   d. P.P. Mantungsuri ji Maharaja
10. **To whom did Gautamswami go to give 'Michhami Dukkadam ?**
    a. Aanand Shravak
    b. Ambad Shravak
    c. Kamdev Shravak
    d. Somdev Shravak
11. **Just by virtue of wishing to go to Temple, we get benefit of ?**
    a. One Upwas
    b. Two Upwas
    c. Three Upwas
    d. Four Upwas
12. **Who is main god (Mulnayak) at Talaja Tirth ?**
    a. Vasu pujya Swamiji
    b. Sumtinath Swamiji
    c. Chandra prabh Swamiji
    d. Suvidhinath Swamiji

Learn elements to become Jain - Answers

1) a 2) d 3) b 4) c 5) a 6) b
7) c 8) b 9) d 10) a 11) a 12) b

सुख कहाँ है ?

आर्य संस्कृति एवं जैन शासन आत्मा के स्वतन्त्र सुख को मानता है । हमें सुख इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होता है अर्थात् हमारा सुख कर्म एवं इन्द्रियों के वश में है । जब सत्य आत्म-सुख को पाने की इच्छा जागती है, तब संसार के सुखों के बीच में भी आत्मा बैचेन हो उठती है इस बात को स्पष्ट करती हुई कथा -

मोहनपुर नामक एक छोटा सा राज्य था। वहाँ के राजा का नाम था भगतसिंह। मोहनपुर के पास में सोहनपुर नाम का राज्य था। वहाँ वीरसिंह राजा राज्य करते थे। दोनों राजा मित्र थे। किन्तु एक बार किसी वजह से दोनों में झगड़ा हुआ। दोनों एक दूसरे के दुश्मन बन गये। दोनों तरफ की सेनाएं युद्ध के लिए तैयार हो गईं।

सोहनपुर की सेना में एक अत्यंत बहादुर एवं विश्वसनीय सैनिक मानसिंह था। एक बार लड़ते-लड़ते वह और उसके साथी दुश्मन सेना के द्वारा पकड़े गए । उन्हें कैदखाने में डाल दिया गया। परन्तु मोहनपुर के राजा भगतसिंह धार्मिक थे। अतः वह दुश्मन सैनिकों पर अत्याचार नहीं करते थे, उन्हें खाने-पीने, रहने की सारी सुविधाएं देते थे।

इसके बावजूद स्वाभिमानी मानसिंह खुश नहीं था। उसके लिए तो बंधन ही सबसे बड़ा दुःख था। हर पल वह कैद में से छुटने का विचार करता रहता। अच्छे खाने-पीने का सुख भी उसे काँटों के समान लगता था।

थोड़े दिन बाद युद्ध समाप्त हो गया। दोनों राज्यों के बीच संधि हो गई। संधि की शर्तों के अनुसार दोनों राज्यों के कैदियों को रिहा कर दिया गया। मानसिंह को असीम आनंद था, अब वह बंधन मुक्त था।

घर जाते हुए मानसिंह को रास्ते में एक तोता बेचने वाला मिला। पक्षी बेच कर वह पैसे कमाता था। पक्षियों को पिंजरे में देखकर मानसिंह का मन पीड़ा से भर गया। वह बेचैन हो उठा। उसने उससे पूछा - भाई ! पक्षियों को पिंजरे में क्यों डाला है ? ये बेचारे कितने दुःखी होते होंगे! आश्चर्य सहित वह तोते बेचने वाला बोला - भैया! ये दुःखी नहीं हैं, इनकी तो मैं अच्छी तरह देखभाल करता हूँ। अच्छा-अच्छा खाने-पीने को देता हूँ। मानसिंह बोला - भैया ! सुखी बनने के लिए अच्छा खाना-पीना ही पर्याप्त नहीं है। सबसे बड़ा दुःख बंधन है। मुझे इसका अनुभव है। यह कहकर उसने पैसा चुकाकर सारे पक्षियों को खरीद लिया तथा पिंजरा खोलकर सारे पक्षियों को मुक्त कर दिया। पक्षी खुशी से कलरव करते हुए दूर-दूर आकाश में उड़ान भरने लगे। मानसिंह भी मुक्त पक्षियों को देखकर फिर से आजादी के आनन्द में मस्त हो गया।

⇨ बोध : प्यारे बच्चों .....

- **जगत में सबसे बड़ा दुःख पराधीनता का है।**
- **चाहे जितनी सुख-सुविधाएं मिलें परन्तु आत्मा को शरीर के पिंजरे में रहना पड़ता है, यह सबसे बड़ा दुःख है।**
- **पशु-पक्षी आदि सभी जीवों के दुःख दूर करने के प्रयास करने चाहिए।**

Where is Sukh ?

Arya culture and Jain rituals believe in the independent joys of soul. We get pleasure through means of senses, which means our happiness (Sukh) is under the control of karma and senses. When desire of getting true joy of soul awakens then inspite of all the joys in this world, our soul gets disturbed. The following story illustrates the same;

There was a small state named Mohanpur, whose ruler was Bhagatsingh. Another state named Sohanpur was situated near Mohanpur. King of Sohanpur was Veersingh. Both the kings were good friends, but due to some reason, they became foes and became enemies. Both the sides started preparing their troops and armed forces for the war.

There was a very brave and reliable soldier in the army of Sohanpur, named Maansingh. Once while fighting he along with few other soldiers was caught by the opposite army. They were jailed. But the ruler of Mohanpur, Bhagatsingh was religious, he didn't torture the enemy soldiers; he used to provide them good food and all other facilities.

But despite this, the self-respecting Maansingh was not happy. For him the imprison was the greatest sorrow. Every moment he thought of getting freedom from the prison. Even the comforts were irritating him like pricks.

Eventually the war stopped and both the states were together again. According to the treaty, the prisoners of both the states were released. Maansingh was very happy because now he was a free man.

On his way back home, Maansingh met a person who was selling parrots. He earned his bread and butter by selling parrots and birds. On seeing the birds captured in the cage, Maansingh's heart got filled with sorrow. He became restless and asked that person, "Hey, Brother !! why have you captured these birds ? How sad the birds would be ! The man replied, "Brother !! These birds are not sad. I take care of them very well and give them sufficient food to eat". Maansingh said, "look, only food is not sufficient to be happy. World's biggest sorrow is not having freedom. I have experienced this". After telling all this, Maansingh bought all the birds by paying the price and then he opened the cage and set them free. All the birds started flying with great joy and chirping all around. Maansingh too, on seeing the free birds, became very happy.

⇨ **Moral : Dear Children .....**

- **World's biggest sorrow is not having freedom.**
- **Whatever luxuries we get, our soul has to reside in the cage of body, which is the biggest sorrow.**
- **We must always think for the welfare of animals and birds and try to remove their sorrows.**

X-3155
V22405
8/12/2020

अनहेप्पी बर्थडे टू यू

प्यारे बच्चों !

जब आपका जन्मदिन आता है तब आप क्या करते हो ? उसे किस प्रकार मनाते हो ? रात्रि में केक काटकर, आइसक्रीम, केडबरी खाकर, कोल्ड ड्रिंक्स पीकर, डिस्को डांस करके, गुब्बारे फोड कर ? **नहीं! नहीं!** जन्मदिन इस प्रकार नहीं मनाना चाहिए, **यह अपनी भारतीय संस्कृति नहीं है। यह गोरे लोगों की संस्कृति है।** भारतीय संस्कृति के अनुसार किसी भी कार्यक्रम के प्रारंभ में दीप प्रज्जवलित किया जाता है, परंतु इस पश्चिमी संस्कृति के अनुसार बर्थ डे में जलती हुई मोमबत्ती को बुझाया जाता है। है न उल्टी संस्कृति ? फिर बच्चों में ज्ञान का दीप कहाँ से प्रज्जवलित होगा ? साथ ही आपकी बर्थ डे पार्टी रात्रि में आयोजित होती है, जिससे रात्रि भोजन का भयंकर दोष लगता है।

इसके अतिरिक्त आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स, केडबरी, केक़ आदि अभक्ष्य वस्तुओं के खान-पान और डिस्को-डांस आदि से भी कर्म बंधता है, परंतु आपको इन सब बातों का ख्याल नहीं है अतः मजे से बर्थ डे मनाते हो । पर इस मजे के परिणाम में आपको सजा भुगतनी पड़ेगी- इस बात से अनभिज्ञ रहते हो। अतः यह वास्तव में आपका हेप्पी बर्थ डे नहीं, बल्कि अनहेप्पी बर्थ डे है, अतः अब इसे पढ़ने के बाद सावधान हो जाना।

दृष्टांत : कोल्हापुर में जिज्ञा - संदीप भाई शाह के दो पुत्र हैं। बड़े लड़के का नाम मोक्षेश तथा छोटे लड़के का नाम अभिषेक है। एक पुत्र तीसरे वर्ष में तथा दूसरा चौथे वर्ष में कदम रख रहा था। वे दोनों भी पहले केक काटकर बर्थ डे का उत्सव मनाते थे, परंतु समझ आने के पश्चात् उन्होंने सोचा कि, ये सभी तो संसार वृद्धि के साधन हैं। ऐसा करने से कर्म निर्जरा - पुण्योपार्जन अथवा आत्मा के हित में कौनसा कार्य हुआ ?

अतः इन दोनों ने अपना जन्मदिन धार्मिक रीति से मनाने का विचार किया और बर्थ डे के दिन उन्होंने जिनालय में परमात्म भक्ति, बोली लगाकर पूजा करना, पाठशाला में पढ़ाई आदि किया। तीन वर्ष पूर्ण हुए थे इसलिए बड़ी साईज के तीन नैवेद्य, तीन फल स्वस्तिक पर रखे। इस प्रकार अष्ट प्रकारी प्रभु पूजा की, चैत्यवंदन किया, प्रभु की आंगी रचाई और गुरूभक्ति, ज्ञान भक्ति, सहधर्मी की भक्ति, सुपात्रदान, अनुकंपादान और जीवदया की।

प्यारे बच्चों! आपको भी इन दोनों बच्चों की तरह जन्मोत्सव मनाना चाहिये और केक, आइसक्रीम आदि का बहिष्कार करना चाहिए। मान लो कि आपकी दस वर्ष की आयु है, तो आप बर्थ डे के दिन 10 भगवान की पूजा करें, 10 पुष्पों से प्रभु की आंगी करें, 10 रूपये भंडार में डालें, 10 गुरू भगवंतों को वंदन करें, 10 गरीबों को दान दे... और उस दिन प्रतिक्रमण-सामायिक एवं मंगल रूप आयंबिल आदि करें, आयंबिल न हो सके तो कम से कम बियासणा करें।

Unhappy Birthday to You !

Dear Children !

When your birthday comes, what do you do on that day ? How do you celebrate your birthday ? By cutting the cake, eating ice-cream, cadbury, taking cold drinks or going to disco ? **No! No!** this is not the way to celebrate the birthday! **This is not our Indian culture! It is a culture of Britishers.** According to Indian culture lighting of the lamp is done before any function, but now we are adopting totally opposite culture, i.e. blowing-off the candle in our birthday. How will then the lamp of knowledge be lit in our life ?

Moreover, night parties are wrong. Eating after sun-set is considered to be a high degree of sin in our Jain religion but we are ignoring this fact. In addition, eating icecream, cadbury, cake; dancing etc. also result into sins. Thus, the way we are celebrating our birthdays, we are continuously committing sins. But we are unaware about the fact that one day we will have to suffer due to this, so, our birthday can not be called Happy Birthday. It becomes an Unhappy Birthday. After reading all this, you should become careful in celebrating your birthday.

Read this true story illustrating that how you should celebrate your birthday : In Kolhapur Mrs. Jigya Sandipbhai Shah has two sons. One is 3 years and other is 4 years old.They used to celebrate their birthdays by cutting cake. But after knowing the above facts, they thought that all these are wrong things. By doing all these, what do we achieve to destroy our sins or to earn 'Punya' ?

Hence, elder one, Mokshesh and younger one, Abhishek, decided to celebrate their birthday in religious manner. On their birthday they went to temple and worshipped the God; after this they went for religious study.

3 years of life were completed so Mokshesh put 3 sweets and 3 fruits over the swastik and did ashtaprakari puja. They also did chaityavandan; worshipped guru and knowledge; did charity, jivdaya etc.

Dear Children ! you should also celebrate your birthday in the same manner.

Suppose you have become10 years old, then worship 10 Gods, decorate God with 10 flowers, put 10/- Rs. in bhandar, give donation to 10 beggars, worship 10 Guru bhagavants... and also do. Pratikraman - Samaik and Aayambil or biyasana atleast !

प्यारे बच्चो !
परमात्मा को केवलज्ञान होने के बाद परमात्मा समवसरण में बैठकर देशना देते है।
वो चित्र आपके सामने है। दोनो समवसरण में 10 प्रकार के भेद (अंतर) को खोजो

Puzzle
पहेली

Dear Children !
search 10 differences between two picture
of Samavsharan Deshna by parmatma
after Kevalgyan

(उत्तर पेज नं. २७ पर)

प्यारे बच्चो !
जीव-अजीव को पहचानकर जीव के सामने (**J**)
एवं अजीव के सामने (**A**) लिखें !

Jr. KG.

Dear Children !
Diffrent types of pictures are given here.
Write **"J"** against **"Jeev"**
and **"A"** against **"Ajeev"**

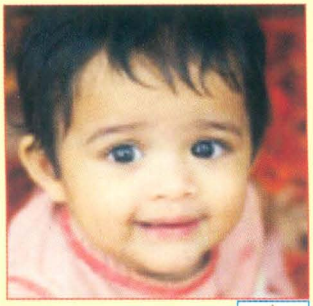
BOY A

BIRD J

BUCKET A

GUITAR & DRUM A

SCHOOL BAG A

SLIPPERS A

SOFA A

TORTOISE J

BED A

BUS A

EGGS J

HORSE J

PANTHER J

T-SHIRT A

SHARPENER A

BOOK A

CAT J

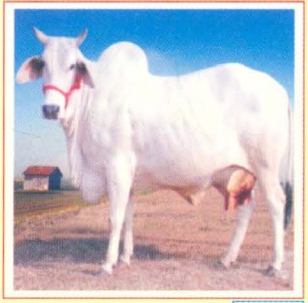
COW J

TOYS A

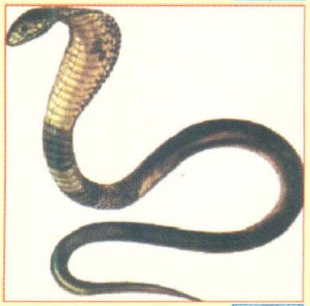
SNAKE J

प्यारे बच्चो !
सब्जिओ में खाने योग्य के सामने (✓)
एवं नहीं खाने योग्य के सामने (✗) करें !

Dear Children !
Given below are the pictures of
Edible & non Edible vegetables.
Mark "✓" against Edible
and "X" against non Edible

GINGER ✗

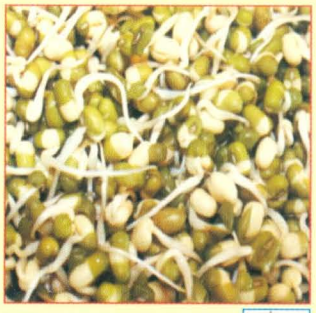
MOONG ✗

CAULIFLOWER ✗

BRINJAL ✗

MUSHROOM ✗

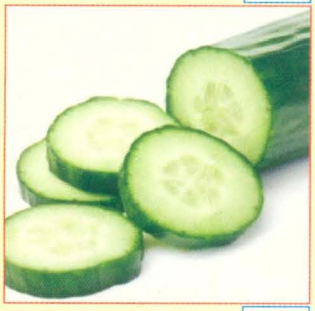
CUCUMBER ✓

GARLIC ✗

GREEN PEAS ✓

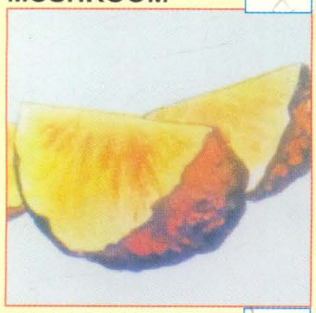
GIANT'S FOOT ✓

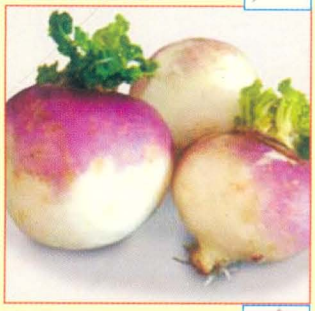
TURNIP ✗

ONION ✗

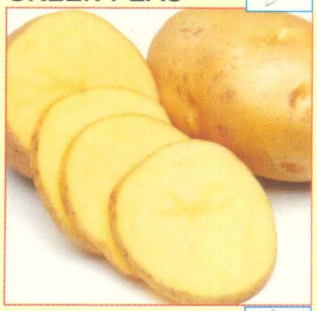
POTATO ✗

RADISH ✗

BITTER GAURD ✓

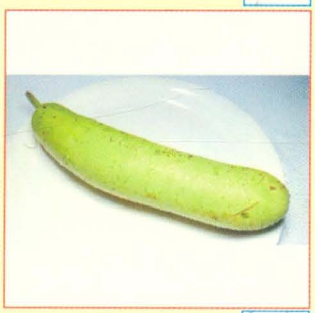
BOTTLE GAURD ✓

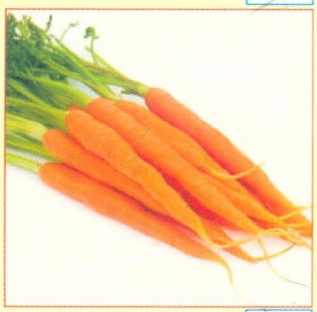
CARROT ✗

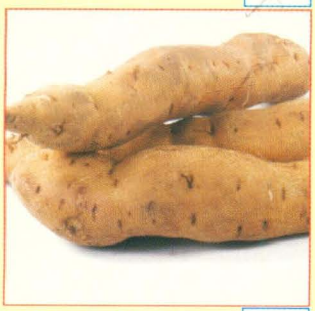
SWEET POTATO ✗

BEET ✗

SPINACH ✓

CAPCICUM ✓

प्यारे बच्चो !
वीर प्रभु के पंच कल्याणक के चित्र नीचे दीये गये है।
कौन सा कल्याणक - कब हुआ ?
कहाँ हुआ ?
पहचानकर उत्तर भरें।

Dear Children !
The picture Veer Prabhu's panch kalyanak are given below. Recognize and fill up the date and place of each kalyanak.

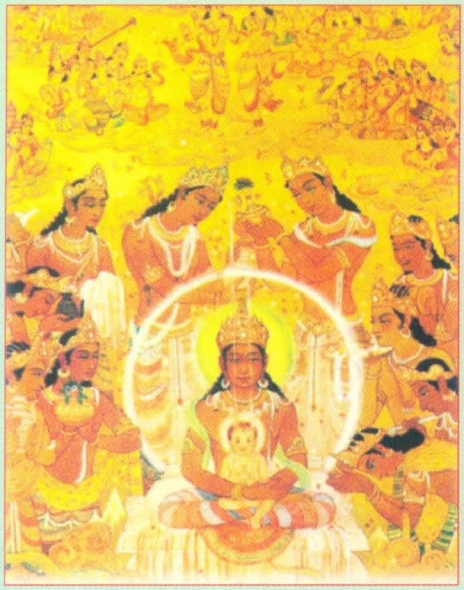

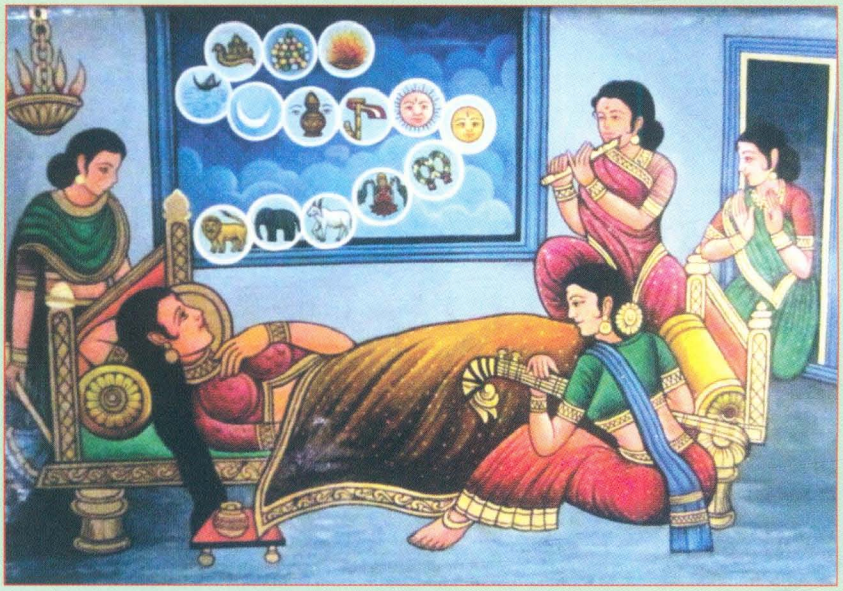

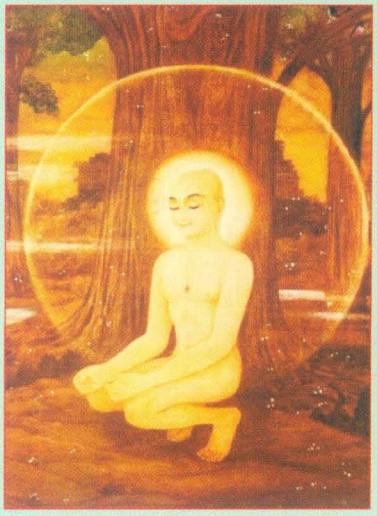

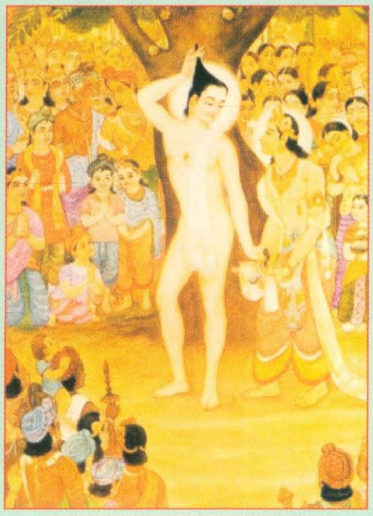

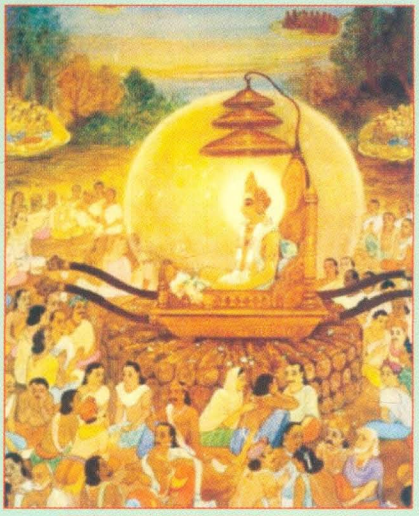

a) Nirvan	b) Diksha	c) Janma d) Kevalgyan e) chyavan
1) Aso Vad Amavas	2) Kartak Vad Dasham	3) Ashad Sud Chhatth 4) Chaitra Sud Teras 5) Vaishakh Sud Dasham
A) Bank of Rujuvalika River	B) Brahman Kundgram	C) Pavapuri D) Kshatriykund nagar E) Kshatriykund nagar

अष्टमंगल / Ashtamangla

प्यारे बच्चों!

अपने शास्त्रों में आठ प्रकार के मंगल चिन्ह बताए गए हैं। उन्हें अष्टमंगल कहते हैं। ये मांगलिक (शुभ) माने जाते हैं । इन्हें भगवान के सामने आलेखना (चावल से बनाना) होता है। आप मंदिर में साथिया बनाते हो तो ये आठ भी बना सकते हो । इन अष्टमंगल की पट्टी घरों के दरवाजे पर लगी होती है। देवलोक के देवविमान में, समवसरण में ये आकार होते हैं, गुरूभगवंत के ओघे में भी ये आकार होते हैं। उन आठ में से दो यहाँ बताए गए हैं। सावधानी-पूर्वक, ध्यान से देखकर रंग भरें।

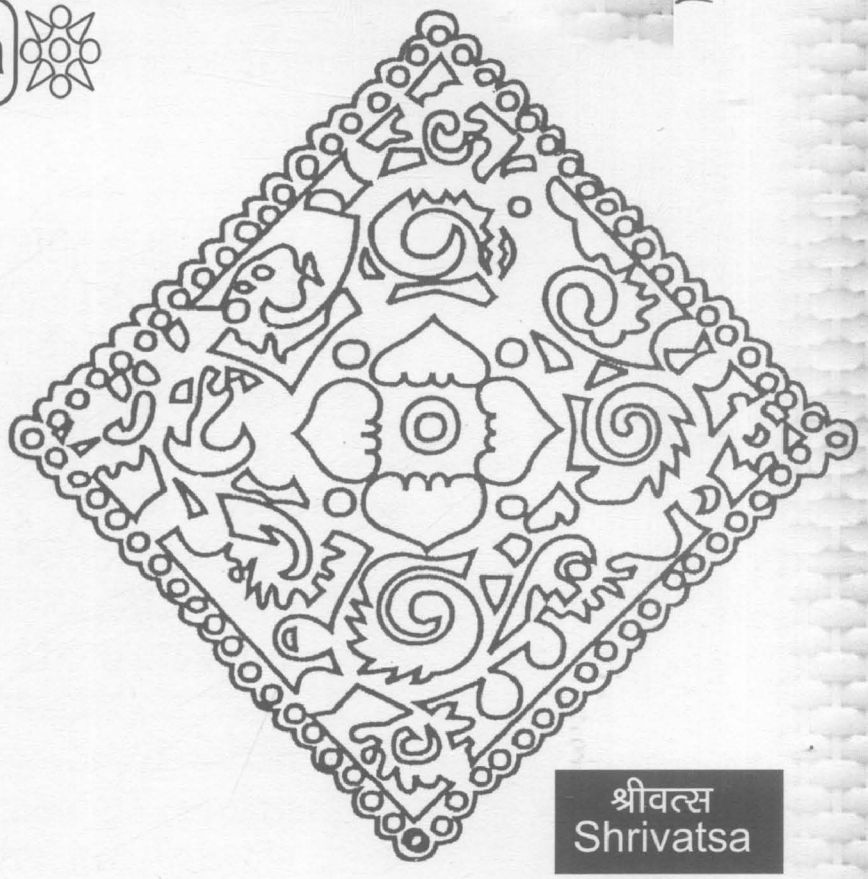

श्रीवत्स
Shrivatsa

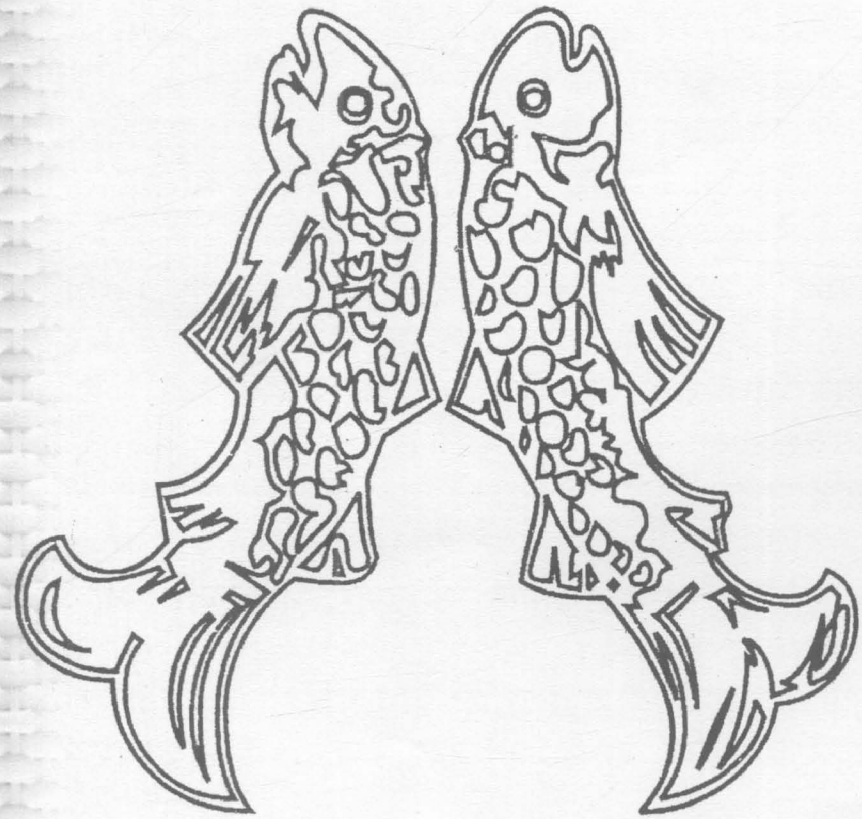

मीनयुगल Meenyugal

Dear Children!

There are 8 types of Mangal Chinnaha" stated in our "Shastra" which are called "Ashtamangal". These are considered as good signs. These are made out of rice in front of God. If you can make a "Sathiya" in the temple, you can make these also. "Ashtamangal' can be seen on the door of our house, on the "Dev Viman" of heaven, in the "Samavasaran" and in the "ogha" of "Guru Bhagavant". Two of them are given here. Colour them carefully.

तीर्थ की आशातना से बचें

प्यारे बच्चों.....

जिससे आत्मा संसार सागर से तिरने की क्षमता प्राप्त करे उसे तीर्थ कहते हैं। मनुष्य तीर्थ यात्रा करता है ताकि कर्मों से हलका हो, न कि भारी। **जैन तीर्थ तीर्थंकरों की पवित्र भूमि हैं।** वहाँ पर तीर्थंकरों का पावन सान्निध्य होता है । वहाँ भक्ति करने से, पवित्र आचरण करने से, व्रत –नियमों का पालन करने से मनुष्यों की तो क्या, तिर्यंचों की आत्मा भी कर्मों का भार कम करके भवरूपी संसार से तिर जाती है। परंतु इसके विपरीत यदि मनुष्य तीर्थ स्थान में जाकर वहाँ तीर्थंकरों की भक्ति न कर विकथा करता है, पवित्रता को छोड़कर मलिन आचरण करता है, व्रत –नियमों का पालन न कर अभक्ष्य भक्षण और अनाचार में अपना समय बिताता है, तो वह कर्मों का क्षय करने की जगह अनंतानंत कर्म बाँधता है जिन्हें अवश्य सहना ही पड़ता है।

शास्त्रों में भी कहा गया है–

अन्य क्षेत्रे कृतं पापं, तीर्थ क्षेत्रे विनश्यति ।
तीर्थ क्षेत्रे कृतं पापं, वज्र लेपो भविष्यति ।।

अर्थात् : अन्य स्थानों पर किये गये पापों की निर्जरा तीर्थ भूमि पर होती है, मगर तीर्थ भूमि पर किये हुए पाप वज्र के लेप की तरह बन जाते है, जिन्हें अवश्य भोगना ही पड़ता है।

इसलिए तीर्थ यात्रा को पिकनिक के रूप में न लें।

तीर्थ स्थानों पर ताश खेलना, फिल्मी गाने सुनना इत्यादि न करें।

तीर्थ यात्रा के दौरान प्रातः नवकारशी का नियम करें, जमीकंद व रात्रि भोजन का त्याग अवश्य करें।

इस तरह तीर्थ यात्रा विवेकपूर्ण, विधि सहित करके पुण्योपार्जन करें।

Maintain the Holiness of Pilgrimage

Dear Children.....

Pilgrimage is a place where soul gets the capacity and power to liberate itself from this world (Sansar). A person foes to pilgrimage for lightening his karmas, and not for making his soul heavier by acquiring new karmas.

Jain pilgrimages are holy places of Tirthankars. There we feel their presence. By worshipping at these places, by following the religious rules, by holy conducts, not only human, even animals overcome their karmas and get liberated. On the other hand, if one does opposite of this : instead of worshipping the god, indulges in bad practices, eats the non-eatables, does not follow the rules of religion at these holy places then, instead of destroying/shading-off his karmas, he acquires infinite karmas, and as a result has to bear its bad effects.

It is said in "Shastras" also

"All the sins done at other places get destroyed at the holy places of pilgrimage, but the sins done at the places of pilgrimage stick to aatma (soul) very strongly and one has to certainly bear with their bad effects."

So don't treat pilgrimages as picnic spots never play cards, listen filmy songs during pilgrimage. Do 'navkarsi'; do not eat non-eatables; do not eat after sun-set.

Earn the virtua (punya) by doing the pilgrimage like this, in holy manner.

नवकार गणित के उत्तर / **Answer of Navkar Numbering**
(पृष्ठ क्रमांक ३३) (Page No. 33)

16	32	63	68	13	22	6		
2	60	48	29	51				
26	59	19	50	44	40	28		
21	64	53	58	4	17	1		
62	49	14	15	67	43	18	41	38
61	33	12	10	11	55	34	52	
46	8	25	35	54	27	7	24	
57	5	66	30	31	42	56	36	
65	45	47	39	20	3	23	37	9

There is no Tirtha like Shatrunjai no God like Rishabh

Dear Children .....

Pilgrimage located on the bank of Shetrunji river, whose every particle is holy, everyone's heart gets filled with pleasure by remembering its name, where every soul (aatma) becomes blessed by darshan of Aadishwar dada, this is that great Tirtha Shatrunjaya. Shatrunjaya is renovated many times by Indras. Last sixteenth renovation was done in V.S. 1587, Vaishakh Vad Chhath by Karmashah. This is the only tirtha which is visited by 23 tirthankars of current chouvisi. Lord Aadinath came purva 99 (baar) (times) over here. During the four months of chaturmas, i.e. between Ashadh sud punam to Kartik sud chaudas one should not go to hilltop where main temple is situated, for pilgrimage.

"Girivar darshan virla pave, purva sanchit karma khapave"

Describing about the glory of this pilgrimage, Shri Simandhar Swami in Mahavideh kshetra says that : "Siddhachal Ji Tirtha" is the king of all Tirthas.

Countless Jain saints and other holy people have attained 'Mahanirvan' here.

This tirth a was named as Shatrunjaya because many won over their internal enemies "shatru" like krodh, dvesh, moh, maya, lobh etc. In each particle of this tirtha there is beauty of equanimity, peace and 'Kevalya'.

Its height is 2000 feet and there are 3745 stairs over a climb of 4 km, from Taleti to Rampole. In "Badi tuk", there are 13036 god's idols and 11474 in 'Nav tuk'. In 'Nav tuk' there are 124 temples and 8961 pagaliyaji.

In the history it is mentioned that during 16th renovation when 2000 Acharyas performed "Anjan Shalaka", god Aadishvar's pratima (idol) breathed seven times. We all know the effect of worshipping God Aadishvar even today.

"शत्रुंजय समो तीर्थ नहीं, ऋषभ समो नहीं देव"

शत्रुंजय नदी के तट पर बसा, शाश्वत तीर्थ, जिसका कण-कण पुण्यशाली है, जिसके नाम स्मरण मात्र से रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठता है, जिसके राजा आदिश्वर दादा के दर्शन से आत्मा धन्य हो उठती है, यही है वो भव्य महातीर्थ शत्रुंजय। इस महान तीर्थ का अनेकों बार जीर्णोद्धार इन्द्रों के हाथों से हुआ है। पिछला सोलहवाँ जीर्णोद्धार वि.सं. 1587 वैशाख वद छट्ठ को करमाशाह द्वारा हुआ था।

यही एक ऐसा तीर्थ है जहां इस चौवीसी के 23 तीर्थंकरों ने पदार्पण किया है। युगादिदेव श्री आदिनाथ भगवान पूर्व नव्वाणु बार इस गिरिराज पर पधारे थे।

चातुर्मास के चार महीने - आषाढ़ सुदी पूनम से कार्तिक सुदी चौदस तक ऊपर यात्रा नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से संघ आज्ञा-भंग का दोष लगता है।

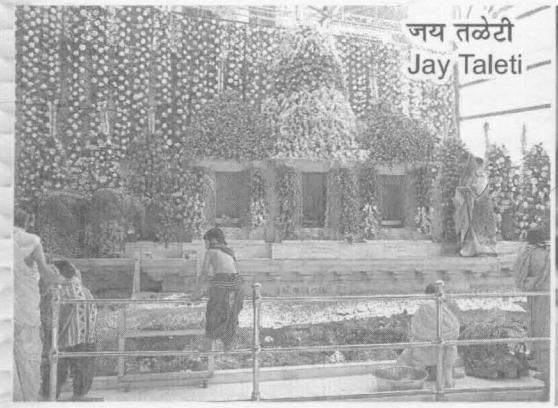
जय तळेटी
Jay Taleti

रायण पगला / Rayan Pagla

रायण वृक्ष / Rayan Tree

"गिरिवर दर्शन विरला पावे, पूर्व संचित कर्म खपावे"

श्री सीमंधर परमात्मा महाविदेह क्षेत्र में इस शाश्वत तीर्थ का महिमा गान करते हुए कहते हैं : "सिद्धाचलजी" - यह सब तीर्थों का सरताज है।

अनंता जैन मुनि तथा पुरुषों ने यहाँ पर महानिर्वाण प्राप्त किया है। अपने मन के क्रोध, द्वेष, मोह, माया, लोभ आदि विकार रूपी शत्रुओं पर उन्होंने यहाँ विजय प्राप्त की, इसलिए इस तीर्थ का नाम शत्रुंजय है। इस तीर्थ के कण-कण में समाधि और कैवल्य की आभा है।

तलेटी से रामपोल तक 3745 सीढ़ियां हैं। ऊँचाई 2000 फीट व चढाई 4 किलोमीटर है। गिरिराज पर बड़ी टूंक में 13036 प्रतिमाजी विराजमान हैं व नव टूंक में 11474 प्रतिमाजी हैं। नव टूंक में 124 मंदिरजी हैं एवं कुल 8961 पगलियाजी हैं।

इतिहास में उल्लेख मिलता है कि सिद्धाचल पर जब 16 वें जीर्णोद्धार के समय अंजनशलाका 2000 आचार्यों द्वारा हुई तब इन्हीं मूलनायक आदिश्वर दादा की प्रतिमा ने सात बार श्वांस लिया था। इनके दर्शन-वंदन-पूजन का प्रभाव आज भी हम सभी जानते हैं।

गोत्र कर्म

प्यारे बच्चों .....

दुनिया में कोई ऊँची जाति वाला होता है, तो कोई नीची जाति वाला होता है। यह सब गोत्र कर्म के कारण होता है।

◉ **ऐसी विषमता क्यों ?**

दुनिया में कोई राजा, मंत्री, सेठ बनता है, तो कोई क्षुद्र बनता है, यह सब इसी कर्म के कारण होता है।

◉ **इस कर्म का फल क्या है ?**

1. उच्च गोत्र कर्म से मनुष्य को मान, सत्ता व सम्मान मिलता है।
2. नीच गोत्र कर्म से मनुष्य को अपमान, पराधीनता व दुत्कार मिलता है।

◉ **यह कर्म कैसे बंधता है ?**

स्वयं के कुल, बल, जाति, ज्ञान, रूप व पैसे का अभिमान करने से व दूसरों का तिरस्कार करने से नीच गोत्र कर्म बंधता है।

◉ **इस कर्म का नाश कैसे होता है ?**

1. देव–गुरू की भक्ति करने से उच्च गोत्र कर्म बंधता है।
2. गुरू भगवंत का विनय, वैयावच्च करने से उच्च गोत्र कर्म का बंध होता है।
3. धार्मिक गाथा याद करने से उच्च गोत्र कर्म का बंध होता है।
4. हमारी भूल की आलोचना करने से उच्च गोत्र कर्म का बंध होता है।
5. उच्च गोत्र कर्म के कारण हमें उत्तम जाति व उत्तम कुल में जन्म मिलता है।

◉ **गोत्र कर्म कुंभार के घड़े की तरह होता है।**

Gotra Karma

Dear Children .....

Someone is from upper cast while someone is from lower cast. This is because of "Gotra Karma".

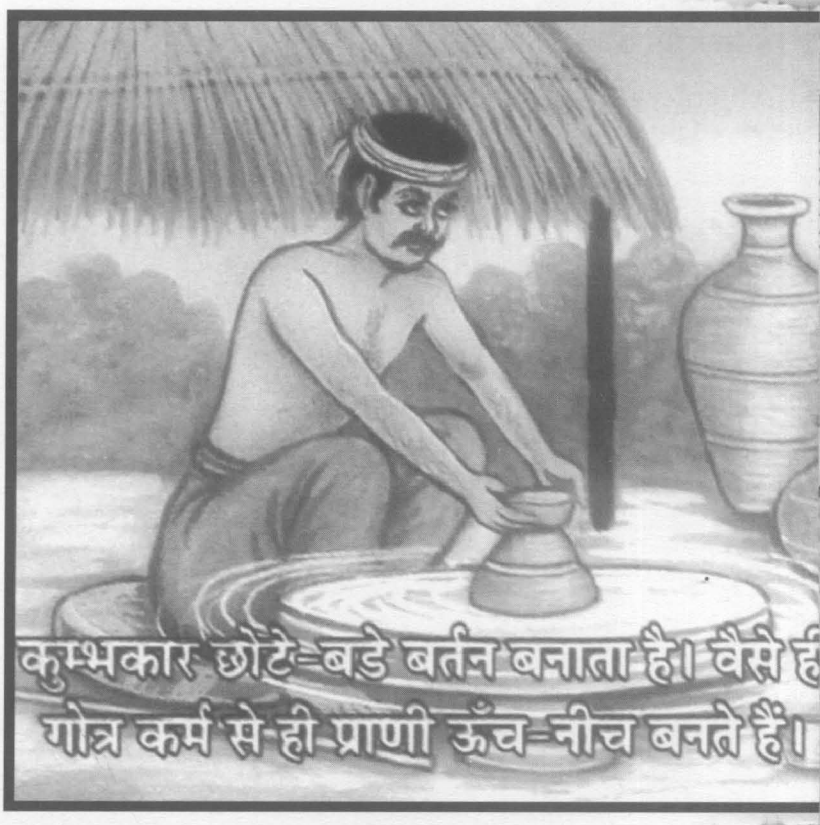

◉ **Why this disparity ?**

Someone becomes king / minister / rich person, Whereas someone becomes poor, having no status in the society; this is because of this karma.

◉ **Results of this karma**

1. By uchcha (higher) gotra karma the person gets position / power / respect / authority.

2. By nich (lower) gotra karma the person gets disrespect, dependence, insult from others.

◉ **Reasons for acquisition of this karma**

Having proud for your cast, power, knowledge, beauty, prosperity and others.

◉ **How we overcome this Karma ?**

We can acquire uchcha gotra Karma-

1. By worshipping dev-gurus.
2. By giving respect to dharma gurus.
3. By learning religious sutras/ gathas.
4. By criticizing our own mistakes.
5. Due to uchcha Gotra karma we get birth in the noble cast/family/relegion

◉ **Gotra karma is like the pot of a potter.**

(पेज नं. १७ की पहेली के उत्तर)
चित्र B मे...
- समवसरण के पीछे गाम नही है ।
- दूसरे गढ में बीचवाला शेर गूम है ।
- हाथी बिना महावत के चल रहा है ।
- पहेले गढमे आगे बेठा हुआ राजा बाहर गया है ।
- तीसरे गढमे लेफ्ट साइड का द्वारपाल गायब है ।
- हाथी की अंबाडी मे राजा नही है ।
- दूसरे गढ मे लेफ्ट साइड मे सफेद घोडा नही है ।
- नवकार चिन्ह नही है ।
- पंखी नही उड रहे है ।
- पहले गढ मे राइट साइड के गेट की लाल धजा नही है ।

अंतराय कर्म

प्यारे बच्चों .....

आपके पास पैसा है, भोजन है, कपड़े हैं, पर फिर भी यदि आप उसका उपयोग नहीं कर पाते हैं तो, इसका कारण अंतराय कर्म है।

◉ **ऐसी विषमता क्यों ?**

कोई दानवीर होता है, कोई कृपण होता है, तो किसी के पास तप करने की शक्ति होते हुए भी वह तप नहीं कर पाता, इन सबका कारण यह कर्म होता है।

◉ **इस कर्म का फल क्या है ?**

1. आप पैसा प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते हैं तो भी प्राप्त नहीं होता। कारण आपका अंतराय कर्म है।
2. आपका मनपसंद भोजन बना है पर बुखार के कारण आप खा नहीं पा रहे हैं। कारण आपका अंतराय कर्म है।
3. आपके पास अच्छे वस्त्र हैं किन्तु आप पहन नहीं पा रहे हैं। कारण आपका अंतराय कर्म है।

◉ **यह कर्म कैसे बंधता है ?**

1. किसी को तप में अवरोधक बनने से यह कर्म बंधता है।
2. किसी को दान में बाधक बनने से यह कर्म बंधता है।
3. आलस करने से इस कर्म का बंध होता है।

◉ **इस कर्म का नाश कैसे होता है ?**

1. किसी को तप करने में सहायता करने से; गरीब, ज़रूरतमंद को दान देने से,
2. गुरु भगवंत को वोहराने से,
3. शक्ति अनुसार धर्म आराधना करने से

अंतराय कर्म का नाश होता है।

◉ **अंतराय कर्म राज भंडारी की तरह होता है।**

Antaray Karma

Dear Children .....

You have everything-money, food, clothes but you are not able to use them, this is because of Antaray karma.

- **Why this disparity ?**

Someone is generous in donating whereas someone is miser, someone has capacity to do taap but he is not able to do, all this is because of this karma.

- **Results of this karma**

1. You try to earn money but you don't get it.
2. Tasty food is prepared at home but because of illness you are not able to eat the same.
3. You have good clothes but you are not able to wear them.

- **How do we acquire this karma ?**

1. By obstructing others from doing taap.
2. By obstructing others from doing charity.
3. By being lazy.

- **How can we overcome this karma ?**

1. By helping others in doing taap, doing charity.
2. By ful filling the requirements of guru bhagavants.
3. By doing religious activities.

- **Antaray karma is like Raj Bhandari (King's Treasurer)**

बछड़ों की धर्म रुची

मथुरा नगरी में जिनदास सेठ रहते थे । उनकी साधुदासी नामक पत्नी थी । सेठ श्रावक थे एवं अल्प संग्रहपूर्वक सादा जीवन गुजारते थे । श्रावक के 12 व्रतों में 5 वां व्रत है – परिग्रह परिमाण व्रत अर्थात् धन-संपत्ति को सीमित रखना । हिन्दु संस्कृति में पशु को भी धन कहते हैं अतः उन्होंने अनेक वस्तुओं के त्याग के साथ पशु रखने का भी त्याग किया था ।

उनके घर एक ग्वालन रोज दूध देने आती थी । साधुदासी उसे बदले में पैसे देती थी । रोज मिलने की वजह से दोनों में मित्रता हो गई । एक बार ग्वालन के घर विवाह प्रसंग होने से उसने सेठानी को आमंत्रण दिया । सेठानी ने कहा – बहन ! हम धर्ममय जीवनयापन करते हैं अतः विवाह में आना तो संभव नहीं है, पर इस हेतु आपको जो सामग्री चाहिए, आप ले जाओ । यह कहकर, उस ग्वालन को वस्त्र, बर्तन, आभूषण आदि उत्तम वस्तुएं दीं जिससे विवाह बेहतरीन हुआ एवं समाज में उनकी खूब प्रशंसा हुई ।

इससे ग्वाला एवं ग्वालन बेहद खुश होकर अति मनोहर व मजबूत 2 बछड़े सेठ को देने आए । सेठ को तो पशु न रखने का नियम था इसीलिए उनको समझाया । परन्तु, बार बार इंकार करने के बावजूद भी सेठ के आंगन में दोनों बछड़ों को बांधकर वे चले गए । सेठ ने दयाभाव से विचारा, 'इन्हें छोड़ दूंगा तो लोग इन्हें हल में जोतकर दुःखी करेंगे, अतः मेरे घर ही रखना अच्छा है ।' दयालु सेठ उचित घास-पानी से उनका पोषण करने लगे ।

जिनदास श्रावक अष्टमी-चतुर्दशी को पौषध लेकर धार्मिक पुस्तकें पढ़ते थे, तो सुन सुनकर दोनों बछड़े भी शुभ परिणाम वाले बन गए ।

'जैसा संग वैसा रंग' इस कहावत के अनुसार जिनदास श्रावक की जीवनचर्या देखकर बछड़े भी धर्मी बन गए । जिस दिन सेठ उपवास करते उस दिन बछड़े भी घास-पानी नहीं लेते । सेठ ने विचारा कि, अब तो ये मेरे साधर्मिक बन गए हैं । इसीलिए उनका बहुमान करने लगे ।

पुण्य के योग से बछड़ों को पशु के जन्म में भी जैन धर्म, व्रत मिल गए । एक बार गांव में पशु-दौड़ का आयोजन रखा गया था। जिनदास का एक मित्र बिना पूछे उन बछड़ों को ले गया तथा गाड़ी में जोतकर स्पर्धा में दौड़ाया । दौड़ में तो वे जीत गए परन्तु आदत न होने से उनके संधिभाग टूट गए ।

मित्र उन्हें वापिस घर छोड़ गया । जिनदास ने देखा – उनकी आँखों से आंसू बह रहे थे, सांस जोरों से चल रही थी । जिनदास की आँखों में भी आंसू आ गए । अंत समय जानकर जिनदास ने उन्हें पच्चक्खाण, नवकार आदि अंतिम आराधना करवाई शुभ भावपूर्वक मरण प्राप्त कर दोनों बछड़े नागकुमार निकाय में कंबल-शंबल नामक देव हुए ।

भगवान महावीर को जब नाव में सुदृष्ट्र देव ने परेशान किया तब इन्हीं देवों ने वहाँ आकर नाव की रक्षा की और उस देव को भगा दिया । बाद में प्रभु की भक्ति, पुष्पवृष्टि करके अपने स्थान पर गए ।

⇨ बोध : प्यारे बच्चों .....

- **शुद्ध धर्म क्रिया करने से हमारे आसपास के लोगों को भी धर्म की रुचि बढ़ती है ।**
- **यदि बैल धर्म श्रवण एवं तप कर सकते हैं तो हम मनुष्य के भव में क्यों नहीं कर सकते ।**
- **पशु-पक्षी आदि किसी भी जीव को मरते समय नवकार सुनाने से उनकी सद्गति होती है ।**

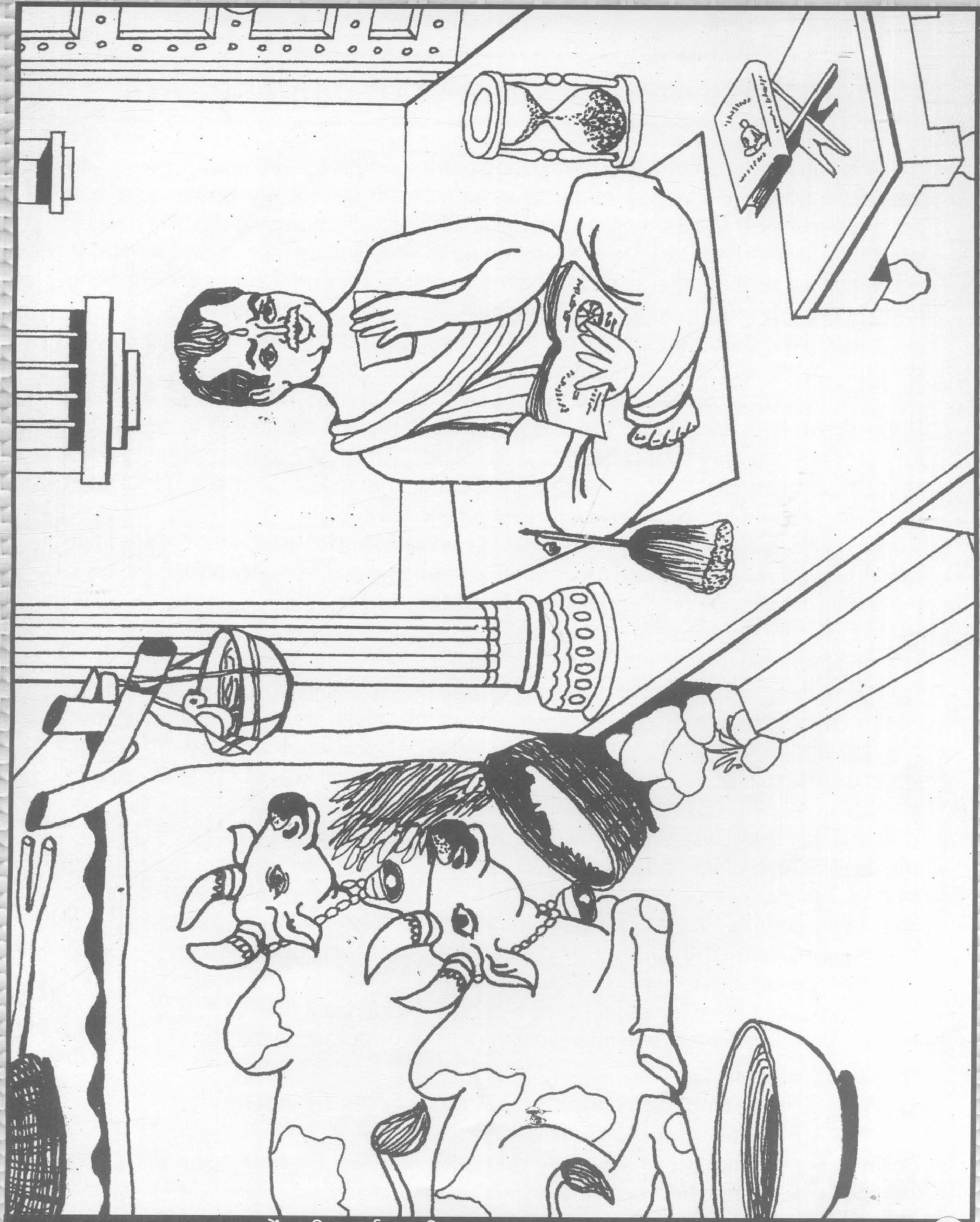

4. बछड़ों की धर्म रुची / Relegious interest of calves

Relegious interest of calves

Once upon a time there lived a rich man named Jindas in Mathura town. His wife was 'Sadhudasi'. He was a respectable person in the society and lived like a comman man. He followed very strictly the 5th vrata of shravak, out of 12 vratas, which is - "Parigraha Pariman Vrat', meaning to keep limited money and wealth. In hindu culture animals are also considered to be wealth and besides renunciating various things he also renounced to keep animals as pet.

A milk maid delivered milk to his house everyday. Sadhudasi paid her for the same. They developed a bend of friendship between them as they met everyday. Once milkmaid invited seth's wife to her place on occasion of a marriage function. She refused by saying that, "We live a relegious life and so unable to attend the function, but you may take whatever you need." Then she gave milkmaid good clothes, utensils, jewellery etc. and all best things that made the marriage function fantastic. The function was praised by everyone in the society.

Being pleased by this, the milkman and his wife came to Jindas and offered him two strong calves. Jindas had renounced to keep any animal so he refused to keep the calves but despite this they left the calves at his house.

He then thought that, If I leave them, they will be tortured by people, so he retained them. He used to nourish them properly.

On "Ashtami-chaturdashi' he used to practise "poushadh" and read religious books. Because of such relegious environment the calves also became relegious . If any day Jindas had fast they also had fast. And so Jindas used to give them respect because of their 'punya' in previous lives, calves in their animal life also got Jain relegion.

On a day there was an animal race in town Jindas seth's friend took the calves without informing him and got them to run in the race. They won the race but got injured. They were weeping and Jindas too. Realizing that the calves were counting their last seconds, Jindas got pachchkhan done from them and recited Navkar mantra. Because of this, they died peacefully and then became Devta namely "Kambal and Shambal !"

When Lord Mahavir was troubled by some Dev in boat then at that time these devata protected the lord and after worshipping him, returned to their place.

➡ **Dear Children .....**

- **Worshipping with purity positively affects people around us.**
- **If calves can become religious then why can't we ?**
- **In the last moment of anybody recite Navkar Mantra and make him listen the same so that his soul gets good place. 'Sadgati'**

नवकार गणित / Navkar Numbering

1	NAM णं	2	NA ण	3	I ई	4	JZAA ज्झा	5	GA ग	6	NAM णं	7	Sa स
8	VV व्व	9	LAM लं	10	CH च	11	NA ण	12	PAN पं	13	HAN हं	14	LO लो
15	A ए	16	NA ण	17	YA या	18	SA सा	19	AA आ	20	VA व	21	NA ण
22	TAA ता	23	MAN मं	24	No णो	25	PA पा	26	NA ण	27	NAA णा	28	NAM णं
29	DDHA द्धा	30	NAM णं	31	CH च	32	MO मो	33	SO सो	34	KKA क्का	35	VA व
36	SIM सिं	37	GA ग	38	NAM णं	39	HA ह	40	YA या	41	HU हू	42	Sa स
43	VV व्व	44	RI रि	45	DHA ढ	46	Sa स	47	MAM मं	48	SI सि	49	MO मो
50	YA य	51	NAM णं	52	RO रो	53	U उ	54	PPA प्प	55	MU मु	56	VVE व्वे
57	MAN मं	58	VA व	59	MO मो	60	MO मो	61	A ए	62	NA ण	63	A अ
64	MO मो	65	PA प	66	LAA ला	67	Sa स	68	RI रि	उत्तर पृष्ठ क्रमांक २३ पे... Answers on pg. No. 23...			

णमो अरिहंताणं Namo Arihantanam	प्रथम पद Pratham Pad	16,	32,	___,	___,	___,	___,	___
णमो सिद्धाणं Namo Siddhanam	द्वितीय पद Dvitiya Pad	___,	___,	___,	___,	___,	___,	___
णमो आयरियाणं Namo Ayariyanam	तृतीय पद Tritiya Pad	___,	___,	___,	___,	___,	___,	___
णमो उवज्झायाणं Namo Uvajjayanam	चतुर्थ पद Chaturtha Pad	___,	___,	___,	___,	___,	___,	___
णमो लोए सव्वसाहूणं Namo Loe Savvasahunam	पंचम् पद Pancham Pad	___,	___,	___,	___,	___,	___,	___
एसो पंचणमुक्कारो Aso panchanamukkaro	षष्टम् पद Shashtum Pad	___,	___,	___,	___,	___,	___,	___
सव्वपावप्पणासणो Savvapavappanasano	सप्तम् पद Saptum Pad	___,	___,	___,	___,	___,	___,	___
मंगलाणं च सव्वेसिं Mangalanam cha savvesim	अष्टम् पद Ashtum Pad	___,	___,	___,	___,	___,	___,	___
पढमं हवइ मंगलं Padhamam havai mangalam	नवम् पद Navam Pad	___,	___,	___,	___,	___,	___,	___

पहेली / Puzzle

प्यारे बच्चों !

परेश को परमात्मा के मंदिर जाना है पर वह रास्ता भूल गया है । उसकी मदद करके परमात्मा से उसका मिलन करवाओ!

Dear Children,

Paresh wants to go to God's temple but he has forgotten the path. Please help him in meeting the God...

पहेली / Puzzle

प्यारे बच्चों! नीचे दिया हुआ लांछन 24 तीर्थंकरों में से किसी एक तीर्थंकर का है । ठीक से पहचानकर प्रश्नों के उत्तर दो और लांछन में रंग भरो।

Dear Children ! Symbol given blelow is the symbol of one of the 24 Tirthankars. Identify it, and answer the following questions. Also fill the colour in the symbol.

1. कुम्भ कौनसे भगवान का लांछन है ? Pot is the symbol of which Tirthankar ? મલ્લિનાથ ભગવાન
2. उनकी माताजी का नाम क्या है ? What is the mother's name of that Tirthankar ?_____
3. उनके पिताजी का नाम क्या है ? What is the father's name of that Tirthankar ? _____
4. उनका वर्ण कौनसा था ? What was the colour of that Tirthankar ?_____
5. उनका जन्म स्थल कौनसा है ? What is the name of birth place of that Tirthankar ?_____
6. उनका आयुष्य कितना था ? What was the age of that Tirthankar ? _____
7. 24 तीर्थंकरों में से वे कौनसे नंबर के तीर्थंकर हैं ? What is the serial of that Tirthankar out of 24 ?_____
8. उनका निर्वाण किस स्थान पर हुआ ? What is the name of the place where he attained Nirvana ?_____

बैंक खाता

जरा सोचिये एक ऐसा बैंक है जो हर सुबह आपके खाते में रु. 86,400 डाले, लेकिन अगले दिन बचा हुए पैसा फिर से निकाल ले । दिन भर में आपने अपने खाते से जितना निकाला वह आपका और रात तक जो पैसा बच जाएगा वह अगले दिन गायब हो के नए खाते में पुनः 86,400 डाले । वह खाता अगले दिन तक कोई बैलेंस ना रखे और हर शाम बचा हुआ पैसा कैंसल कर दे ।

आप क्या करेंगे ? अपने खाते में से हर पैसा निकाल लेंगे ।

ऐसा बैंक संसार के हर व्यक्ति के पास है । उस बैंक का नाम समय है ।

हर सुबह वह आपके खाते में 86,400 सेकेंड डालता है । और हर रात बचा हुआ समय उसमें से निकाल लेता है । वह समय को आपके पास बचा कर नहीं रखता । हर दिन वह नया खाता खोलता है और हर रात उसमें से बचा हुआ समय निकाल लेता है । अगर दिन भर में आप उसमें से कुछ समय बिगाड़ देते हो तो वह दोबारा आपके पास कभी नहीं आता । इसलिए अपने समय का सदुपयोग कीजिए ।

हम सभी के पास दिन में 24 घंटे होते हैं । जो इन 24 घंटों का सदुपयोग करना सीख लेता है जीत हमेशा उसकी होती है ।

Bank Account

Imagine there is a Bank, which credits your account each morning with Rs. 86,400/- carries over no balance from day to day, allows you to keep no cash balance, and very evening cancels whatever part of the amount you had failed to use during the day.

What would you do ? Draw every pence of course !

Well every one has such a bank. Its name is time.

Every morning, it credits you with 86,400 seconds, every night it writes off, as lost, whatever of this you have failed to invest to good purpose. It carries over no balance. It allows no overdraft. Each day it open a new account for you. Each night it burns the records of the day. If you fail to use the day's deposits, the loss is yours.

There is no going back. There is never enough time or too much time. Time management is decided by us alone and no one else.

It is never the case of us not having enough time to do things but the case of whether we want to or not.

ACHARYA SHRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar-382007.
Phone : (079) 23276252, 23276204-05

Upakaran's Pair

Match the Coloum

प्यारे बच्चो !

साधु के उपकरण और संसारी के अधिकरण जोडो

तरपणी

पात्रा

Hair Cutting

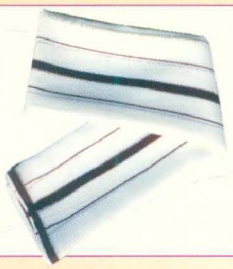
कामली

कपडो

Car

ग्रंथ

Bed

विहार

Vessels

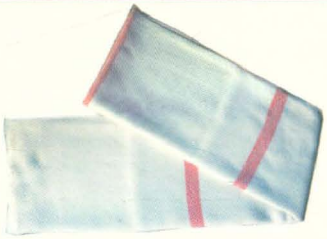
संथारो

Wear

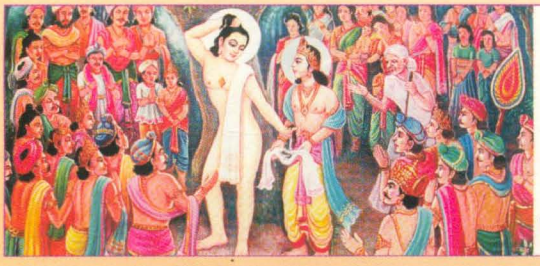
लोच

Text Books

संस्कार सहयोगी

Sanskar Sahyogi

आलोक वडालिया | अरुहंत मेहता | अर्णव शाह | अरिषा जैन | भव्य रामाणी | धीर रामाणी | हेत शाह | हिया शाह | कल्प शाह | महक शाह | नवम चौरड़िया

नींव नाहर | प्रथम शाह | पर्व शाह | शौर्य शाह | शौर्य नगावत | शौर्य गोटेवाला | तन्मय शाह | दिशी जैन | आरव तांतेड़

संस्कार सहयोगी / Sanskar Sahyogi

आप ६३००/- रु. का दान देकर संस्कार सहयोगी बन शकते है। आपके लाडले का फोटो १२००० मेगेझीन मे प्रकाशित होंगा।

You can become 'Sanskar Sahyogi' by giving donation of Rs. 6300/-. Photo of your child will be published in 12000 copies of this magazine.

Please give attantion

Now a days, our children lost their childhood in technology & Western culture. So that, they forget the importance of family life, religion, culture & nation.

If we want to make our children aware of culture & religion, want to bring their childhood back by saving them from bad effects of Mobile, T.V.,Movies & make them ideal child....pls. take mobile from their hands with love & put this books in their hands.

कृपया ध्यान दिजीये...

वर्तमान समय में भौतिकता एवं टेकनोलोजी की आंधी में हमारे बच्चे ऐसे गूम हो गये है की धर्म, संस्कृति, राष्ट्र, परिवार आदि सब भूल गये है।

अगर हमे हमारे बच्चो को सुसंस्कृत करना है, मोबाइल, टी.वी., सिनेमा के दूषणो से बचाकर फिरसे उनका बचपन वापस लाना है और एक आदर्श बालक और भविष्य का आदर्श श्रावक बनाना है तो अवश्य उनके हाथ से प्रेम से मोबाइल ले के यह पुस्तक थमा दिजीये...

Jainism With Art

अंक 5 से 8 की किंमत रु. 200/-

Book no. 5 to 8 Rs. 200/-

After the tremondous response from children, your favourite treasure of knowledge, Part no. 5 to 8 is in your hands.

After January 2018, 'Jainism with Art' will be published every three month. you can become member by filling up form attached with this copy. You can receive magazine at your doorstep.

कला द्वारा संस्कार सिंचन

बालको द्वारा अद्‌भुत आवकार एवं प्रतिसाद के बाद जोरदार मांग के वजह से आपका चहीता, मनपसंद ज्ञान का खजाना अंक ५ से ८ के रुप में आपके हाथ में है।

जनवरी २०१८ से 'कला द्वारा संस्कार सिंचन' मेगेझीन हर तीन महिने प्रगट होगा। इसके साथ दिये गये फोर्म भरकर आप भी जल्द सदस्य बनीये और घरबेठे मेगेझीन पाईये।

Three Year Three Monthly Magazine
Membership Fee Rs. 500/- only

त्रिवर्षिय त्रिमासिक मेगेझीन
लवाजम रु. ५००/- मात्र

फोर्म एवं रकम भेजने के संपर्कसूत्र

पूर्णानंद प्रकाशन

भावनाबेन शाह
Mo. 98193 17766
103, मधुसदन एपार्ट., गीतांजलि - जैन देरासर की गली, हरिदास नगर, बोरिवली (वेस्ट) मुंबई-92

गीरीशभाई दोशी
Mo. 7977944600
701, शालीभद्र एपार्टमेन्ट, अरिहंत पार्क, सुमुलडेरी रोड, सुरत.

पारस शाह
Mo. 81281 45044
बी-404, अयोध्यापुरम् एपार्ट., कहान फलिया, कतारगाम, सुरत.

Mann 81281 45044